ॐ सत्नाम साक्षी

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के
संस्थापक - प्रवर्तक - युगपुरुष - कर्मयोगी

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का

संक्षिप्त जीवन परिचय एवं लेख

(भाग-3)

संकलन/संपादन : संत मोनूराम प्रेमप्रकाशी

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर ● श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद

ॐ सत्नाम साक्षी

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के
संस्थापक - प्रवर्तक - युगपुरुष - कर्मयोगी
आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का
संक्षिप्त जीवन परिचय एवं लेख
(भाग-3)

संकलन/संपादन : संत मोनूराम प्रेमप्रकाशी

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर ● श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

युगपुरुष-युगदृष्टा की संसार को अनमोल देन है-

श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ

प्रेम! प्रेम! ओहो, कितने कर्णप्रिय श्रुत मधुर शब्द हैं। इन दो अक्षरों पर संसार की समस्त वस्तुएँ भी वारी जायें तो भी कम है। इसे समझना बड़ा ही कठिन व दुर्लभ है और जिसने इन दो अक्षरों (प्रेम) को समझ लिया उसे साक्षात् भगवद् की प्राप्ति हो जाती है। हमें भी उस सच्चे विशुद्ध प्रेम की आवश्यकता है। प्रेम प्रभु का साक्षात् स्वरूप है। वन-वृक्ष, लता-पुष्प और कुंज-निकुंज सर्वत्र प्रेम ही प्रेम विद्यमान है। जिस प्रकार दुग्ध की बूंद-बूंद में घृत, पुष्प में सुगन्ध, चन्द्र में शीतलता, अग्नि में ताप की व्यापकता है उसी प्रकार संसार के समस्त कण-कण में परमात्मा की व्यापकता और प्रेम रस रम रहा है। भावुकता, सहृदयता, और अनुभूति द्वारा इस प्रेम की उपलब्धि होती है।

प्रेम एक बड़ी ही मीठी, मादक और मधुर मदिरा है जिसने इसका रसास्वादन किया वह निहाल हो गया, धन्य-धन्य हो गया। मस्त हो गया। उस मतवाले की भला कौन बराबरी कर सकता है। संसार के सारे शांहशाह उसके गुलाम हो जाते हैं। त्रिलोकी का राज्य उसके लिये तृण के समान प्रतीत होता है।

इन्द्रराज वैकुण्ठ सुख, नहीं मांगू धन धाम।
कह टेऊँ मुझ दीजिए, हे हरि अपना नाम।।

सर्वत्र आनन्द ही आनन्द! अपनी मस्ती में मस्त! उसी प्रेम की मस्ती का स्वयं पाठ पढ़के श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की स्थापना की हमारे युगपुरुष-युगदृष्टा आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने। "**भक्तेश्च मार्गस्य निदिर्शकाय - प्रेम प्रकाश मण्डलोद्भवाय**"। उसी प्रेम तत्त्व को अच्छी तरह समझा और उस पर गहन चिन्तन-मनन किया। वैसे प्रेम का कोई अलग अस्तित्व नहीं है। प्रेम तो प्रभु की परछाई है। परछाई यथार्थ वस्तु की तो होती है अर्थात् प्रेम और प्रभु दो नहीं हो सकते।

प्रेम की समता किससे की जाय? जब उसकी बराबरी की कोई दूसरी वस्तु हो तभी तो

तुलना की जा सकती है। वह अद्वितीय, अनिर्वचनीय और अनुपमेय है। उसके समान संसार में आज तक कोई वस्तु न हुई है न है और न आगे होगी। वह अजर अमर और अनादि है तो ऐसी वस्तु को ही अपने जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए जिसका न कभी अन्त हो और जो सदैव अजर अमर रहे। सत्पुरुष इन्हीं गहराइयों में जाकर उस प्रेम तत्त्व की खोज करते हैं। सफलता प्राप्त होने पर प्रेम और परमात्मा की भिन्नता ही समाप्त कर लेते हैं।

प्रेम हरी कौ रूप है, त्यौं हरि प्रेम स्वरूप।

तभी एक जगह लिखा है-

अनुभव से कहता हूँ, मैंने उसे कर लिया है बस में।
जो चाहे सो पिये प्रेम से, अमृत भरा है इस रस में।।

ऐसे प्रेम रस के रसिक प्रेमा स्वरूप सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज अनुभवी वाणी द्वारा रचित ग्रन्थावली का नाम "**श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ**" नाम ही के अनुरूप इस ग्रन्थ की यही एक विशिष्ट विशेषता है कि इसमें सभी धर्म ग्रन्थ, सत्शास्त्रों का सार तत्त्व भरा हुआ है. साथ ही यह प्रेमारस, भक्ति, ज्ञान, कर्म, गुरु महिमा, प्रभु गुणगान, मुक्ति का स्वरूप, ब्रह्मज्ञान, राम-नाम महिमा, आदि अमृतरस से परिपूर्ण है।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने जिस आध्यात्मिक अमृत का रसास्वादन किया, उस अमृत का दूसरों को आस्वादन कराने के लिये उन्होंने "**श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ**" की रचना की।

अनुभवी वाणी गुरुदेव की- ग्रन्थ प्रेम प्रकाश।
जांके श्रवण मनन से, होवन पूर्ण आस।।

महाराज श्री एक सिद्ध योगी के साथ-साथ दर्शनिक, समाज सुधारक, संगीतज्ञ, भक्त कवि, संत एवं अध्यात्म युग दृष्टा के रूप में भी जगत के सामने आये। वे स्वतंत्रता तथा सात्विक सरल व सादा जीवन जीने के प्रबल समर्थक थे। उनकी साधना, स्वानुभूति, सद्विचार तथा सदाचार से सम्बन्ध रखती थी। महाराज जी ने अपने तप बल व भक्ति साधना से न केवल सिन्ध प्रदेश को अपितु सारे संसार को अपनी ज्ञान ज्योति से आलोकित किया। उनकी वाणी में माधुर्य था और कण्ठ में साक्षात् विद्या प्रदायनी माँ सरस्वती थी। महाराज श्री ने अपनी वाणी में किसी

भी मत, मजहब, भेष, पंथ, जाति की निन्दा या खण्डन नहीं किया है. पूरे जीवन भर लोकोत्तर हेतु देशारटन करते-करते हृदय से जो अनुभव वाणी प्रेम-भक्ति-ज्ञान की मंदाकनी प्रवाहित होती रही उन्हीं ज्ञान की अमृतवाणी का अमूल्य खजाना है- "**श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ**"।

आचार्य श्री गुरुवर स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत कवियों में विशिष्ट स्थान रखते हैं। उन्होंने अपने जीवन काल में तप- साधना के साथ-साथ श्रीमद्भगवदगीता, वेद, उपनिषद्, भागवत, रामायण, योग वशिष्ठ, पारस भाग आदि अनेक ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया।

उन्होंने अपने साधना काल में समय-समय पर अनेक संत, महापुरुष, तपस्वियों, योगियों व विद्वज्जनों का सम्पर्क भी किया। जिनसे सदैव आध्यात्मिक ज्ञानचर्चा करते रहे. ज्ञान-विज्ञान का आदान-प्रदान करते अन्तःकरण में ईश्वर के प्रति अत्यंत प्रेम अनुराग उत्पन्न हुआ। उस प्रेमाभक्ति का संचार भक्त कबीर, मीरा, रसखान, सूरदास की भाँति उनके श्रीमुख से कविता रूपी पद्य, दोहे, छन्द, भजन रूपी ज्ञान गंगा के रूप में प्रवाहित हुआ। जिससे न सिर्फ तत्कालीन संतप्त लोगों को शीतलता प्रदान की किन्तु युग-युगान्तर उनकी पवित्र अमृतवाणी हमें रसास्वादन करायेगी।

युगदृष्टा प्रेरणास्त्रोत सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की अमूल्य कृति है- '**श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ**'। जिसके पठन व श्रवण करने से आध्यात्मिक परम आनन्द की प्राप्ति होती है. ग्रन्थ में बहुत सी वाणी हिन्दी और सिन्धी में संग्रहित है। आध्यात्मिक उन्नति के लिये ग्रन्थ की वाणी मरुस्थल में अमृत घट के समान है. लोकोद्धार दृष्टि से दिशा-निर्देश में भी समय-समय हमारा मार्गदर्शन करती है। अनेक संत कवि महापुरुषों के समान ही ग्रन्थ में राग-रागनियों में काव्य रचनाएँ की गई हैं। जैसे राग आशा, राग पहाड़ी, राग सांरग, राग भैरवी. इससे प्रमाणित होता है कि महाराज श्री को भारतीय संगीत विद्या का अच्छा ज्ञान था. कहते हैं कि जब वे सत्संग में भजन गाते थे तो सभी श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो जाते थे. एक समय तो महाराज श्री ने एक ही भजन को सोलह राग-रागनियों में गाकर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। जिस प्रकार संगीत के आचार्य भगवान शिव को कहा जाता है उसी प्रकार सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज को भी शिवस्वरूप कहना भी अतिश्योक्ति नहीं होगी। हिन्दी संत कवियों की सदृश ही महाराज श्री ने भी अपनी वाणी में सवैया, दोहे, भजन, पद्य, छन्द, सलोक, कवित्त, कुण्डलियाँ, धनाश्री छन्द, कोटड़ा

छन्द, बारह मास छन्द, सप्त दिवस छन्द आदि छन्दों में काव्यगत रचना की है। इन्हीं काव्यगत रचनाओं में गुरुभक्ति, ईष्ठार उपासना, आत्म ज्ञान, वेदांत, संतों का संग, ब्रह्मज्ञान, कर्म बन्धन, ईश्वर प्रेमाभक्ति, सेवा भक्ति, गुरु महिमा, माया का स्वरूप, अभयदान, प्रभु की व्यापकता आदि विषयों पर सरल व सुबोध वाणी का संचार किया है। यह कहना भी अतिश्योक्ति नहीं होगी कि महाराज श्री द्वारा रचित "**श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ**" विभिन्न संत परम्परा के रचे गये गुरु ग्रन्थ साहिब, कबीरदास का बीजक ग्रन्थ आदि समतुल्य है. लगभग आठ सौ पृष्ठीय "**श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ**" आध्यात्मिक क्षेत्र में एक विशिष्ठ स्थान रखता है. ग्रन्थ में सर्व प्रथम मंगलाचरण- '**सत् चित ब्रह्म इक-निर्गुण निर आकार, कह टेऊँ सो होत है, सर्गुण रूप साकार।**' उस परमात्म स्वरूप को दर्शाया गया है. '**तांको मैं वन्दन करूं-जान सर्व का रूप, कह टेऊँ सेवत जिसे, सुर नर मुनि जन भूप।।**' सभी में परमात्मा की व्यापकता जानकर वन्दना की जा रही है। जिसकी सभी देवी-देवता, किन्नर, गंधर्व, देव, दानव, ऋषि-मुनि आदि पूजा-अर्चना करते हैं। इसी के साथ ग्रन्थ के प्रारम्भिक भजन में भी स्वयं को गुरु का दास मानकर इस भवसागर से पार उतारने की प्रार्थना की गई है।

गुरु दयाल प्रतिपाल, प्रभू पार तारो,
प्रभू पार तारो, हरी दास मैं तुम्हारो।

युग प्रणेता परम पुरुष सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने इसी प्रकार पूरे ग्रन्थ साहिब में अलग-अलग आध्यात्मिक विषयों पर हमारा ध्यान केन्द्रित किया है। अनेक संत-कवियों के समान ही सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने भी गुरु महिमा का व्याख्यान इस प्रकार किया है-

नमस्कार गुरु को करूँ, जो है ब्रह्म स्वरूप।
कह टेऊँ जिस सेव से, पाया ज्ञान अनूप।।
सद्गुरु बिन निज ज्ञान न होवे, कह टेऊँ सत मान।
ज्ञान बिना नहिं मुक्तिहोवे, कहते वेद पुरान।।

गुरु के बिना ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती चाहे वह सांसारिक ज्ञान हो या आध्यात्मिक ज्ञान हो सभी भक्त कवियों ने गुरु की महत्ता पर बल दिया है। महाराज श्री ने एक जगह उपमा अलंकार व

रूपक अलंकारों द्वारा गुरु महिमा को इस प्रकार गाया है कि गुरु सागर सम शीतल एवं ज्ञान रूपी रत्नों से परिपूर्ण है जो सत्गुरु की सेवा करता है उसे आत्मज्ञान रूपी अमूल्य रत्न प्राप्त होता है।

गुरु साक्षात् भगवान का स्वरूप है। उनका पवित्र स्थान स्वर्ग के समान है और उनके चरणों का स्पर्श जल गंगाजल के समान है-

गुरु चरणामृत गंगजल, वैकुण्ठ गुरु स्थान।
सत्गुरु विष्णु स्वरूप है, कहते वेद वख्यान।।

मन में गुरु के प्रति अगाध श्रद्धा भाव रखकर ग्रन्थ में गुरु महिमा को भलीभाँति प्रमाणित किया है। सद्गुरु महाराज जी न केवल महान संत कवि थे साथ ही दार्शनिक भी थे। उन्होंने ग्रन्थ में दार्शनिक विचारों का भी उल्लेख किया है। ब्रह्म, जीव, जगत, माया, मुक्ति सम्बन्धी विचारों को भी व्यक्त किया है।

ब्रह्म अखण्ड अद्वैत अनामय, सत् चित आनन्द राशि है।
कहे टेऊँ सो प्रत्यक्ष जानो, साक्षी स्वयं प्रकाशी है।।

ब्रह्म सर्वव्यापी है सर्वत्र उसकी सत्ता विद्यमान है एवं सर्वत्र उसी का प्रकाश है। जीव अज्ञान के कारण स्वयं को देह मान बैठा है। जीव तथा ब्रह्म दोनों में पूर्ण अभेद है। दोनों में शुद्ध चेतन्य को लेकर एकता मानी जाती है। जगत को स्वप्न सम मिथ्या एवं झूठा माना जाता है। 'जो कुछ दीखत सोई स्वपना, स्वपना सब संसारा है' स्वप्न में जितने भी पदार्थ दृश्यमान हैं वे असत हैं, उनका कोई अस्तित्व ही नहीं। ब्रह्मज्ञान प्राप्ति के पश्चात् जगत झूठा प्रतीत होता है। माया के विभिन्न रूप हैं 'मरकट अग्नि बादल छाया स्वपन पदार्थ के सम माया' माया भी ब्रह्म की उत्पत्ति है किन्तु मिथ्या है। गुरु के ज्ञान द्वारा जब जीव को यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है तब वह जन्म-मरण के चक्कर से छूटकर मुक्त हो जाता है।

ऐसे ही राम नाम की महिमा, सत्संग महिमा, प्रेम की पराकाष्ठा, अन्तः साधना, सेवा की महत्ता, संत महिमा, सच्चा सन्यासी, परोपकर, मौन की महिमा, पुरुषार्थ, माँस भक्षण का त्याग करना, शाकाहार से लाभ, उपवास का महत्त्व, विचारों की शुद्धता, सुधारवादी दृष्टिकोण, शिक्षाएँ, कर्म प्रधानता, भगवद् चर्चा, भागवत, गीता, रामायण, वेद-वेदान्त, आदि सभी सत् शास्त्रों को संजो कर सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने "**श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ**" रूपी अमूल्य

खजाने का भण्डारा हम सबको प्रदान किया। जो प्रेम रस से परिपूर्ण है. जिस प्रकार गोपिकाओं को भगवान का प्रेम पाने का अनूठा बाँसुरी (मुरली) रूपी मंत्र मिल गया था उसी प्रकार हम सभी जिज्ञासु गुरुमुखों को इस प्रेमरस पान का अनूठा अनुपम खजाना प्राप्त हुआ है। जिसका हम नित्य प्रति पाठ करके जन्म-मरण के चक्कर से छूटकर परम पद को प्राप्त कर सकते हैं।

प्रेम प्रकाशी प्रेमियों- रहो गुरु के पास।
कह टेऊँ नित ही पढ़ो- ग्रन्थ प्रेम प्रकाश।।

संत कबीर, मीरा, सूरदास, रसखान, गुरुनानक, दादू दयाल, रैदास, आदि संतों के सदृश ही सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित अमर ग्रन्थ वाणी "**श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ**" सदैव अज़र, अमर होकर समय-समय हम सब जीवों का मार्गदर्शन करता रहेगा।

ऐसे परम पुरुष, युगदृष्टा, महायोगी, तपस्वी श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के रचयिता आचार्य सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज को हमारा शत्-शत् नमन व कोटि-कोटि वन्दन!

अमरापुर से आयके, जपकर सोहम् नाम ।
अनुभव की वाणी रचिव, सद्गुरु टेऊँराम ।।
अमरापुर वाणी जिसे, नाम दिया गुरुदेव ।
पढ़कर सुनकर पाइये, बसन्त आत्म देव ।।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की उत्तराखण्ड यात्रा

(डेढ़ माह में पैदल चलकर पूरी की चार धाम की यात्रा)

हमारे धर्मप्राण भारतवर्ष में अनेकानेक तीर्थ स्थल, मंदिर , पौराणिक स्थल, द्वादश ज्योतिर्लिंग, सिद्ध पीठ, तीर्थ सरोवर, सप्तपुरी और चार धाम की शास्त्रों में अनन्त महिमा बताई गई है. इसमें भारत के प्रमुख चार धाम बताये गये हैं- (१) श्री बदरीनाथ धाम (२) श्री रामेश्वरम् धाम (३) श्री द्वारका धाम (४) श्री जगन्नाथ पुरी धाम! इसी के साथ-साथ हिमालय की गोद में उतराखण्ड के विश्वप्रसिद्ध चार धामों की महिमा का भी उल्लेख मिलता है वह इस प्रकार है- (१) श्री बदरीनाथ धाम, (२) श्री केदारनाथ धाम (३) श्री गंगोत्री धाम (४) श्री यमुनोत्री धाम! इनकी यात्रा करना अथवा दर्शन करना बड़ा पुण्य व फलदायक माना जाता है।

सन्त-महात्मा जीवों का उद्धार करने के लिए इस धरा-धाम पर अवतरित होते हैं। यत्र-तत्र- सर्वत्र भ्रमण-सैर करके अज्ञानता में सोये जीवों के हृदय में आत्मज्ञान की ज्योति जगाते हैं। वे विषय भोगों और पापों से किनारा करते हुए सभी जीवों को सत्य का उपदेश करते रहते हैं। **'पानी बहता भला- साधु रमता भला'** की उक्ति को चरितार्थ करते हुए आज से ७०-८० वर्ष पूर्व प्रेमप्रकाशियों के आराध्य **'भगवद् स्वरूप सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** संत मण्डली एवं भक्तजनों को साथ लेकर हिन्द-सिंध में भ्रमण करते थे, कभी शहरों में तो कभी पवित्र तीर्थों पर! ऐसे ही तीर्थयात्रा करते-करते एक समय हरिद्वार तीर्थनगरी पहुँचे। जिन्हें हम पापमोचिनी भागीरथी गँगा आदि के नाम से भी जानते हैं यहाँ माँ गँगा की धवल धाराएँ सभी को अपनी ओर आकर्षित करती हैं सायंकालीन आरती का दिव्य नजारा एवं माँ गंगा में प्रवाहित होने वाले दीपक बड़े ही मनमोहक चमचमाते सितारों की भाँति दिखाई पड़ते

हैं. उसी पावन हरि की पैड़ी पर पवित्र ब्रह्मकुण्ड में माँ गँगा स्नान- ध्यान; पूजा-पाठ, दीपदान कर कनखल में स्थित स्वामी चेतनदेव जी महाराज की कुटिया में आये. उस समय वहाँ के महन्त स्वामी प्रेमदास जी महाराज थे। वे **'महाराज श्री'** से मिलकर बड़े ही प्रसन्नचित्त हुए। उस समय यात्रा के दौरान स्वामी जी के साथ ३०-३५ साधु-संत एवं प्रेमी भक्त थे। तीर्थनगरी में कुछ दिन रहकर सत्संग-प्रवचन, पूजा-पाठ, ध्यान-स्मरण के साथ-साथ भीमगोड़ा, अवधूत मण्डल, संत निरंकारी आश्रम, दक्ष प्रजापति, सती कुण्ड, स्वामी कमलदास कुटिया आदि मंदिर, आश्रम व पौराणिक सिद्ध स्थलों के दर्शन किये। इसी बीच सप्तदिवसीय स्वामी जी ने गूढ़ वेदान्त के ऊपर बड़े सुन्दर-सुन्दर व्याख्यान दिये इससे प्रभावित होकर महन्त प्रेमदास जी का महाराज श्री के प्रति इतना प्रेम-स्नेह हो गया कि उन्होंने हृदयभाव से कहा- **'सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज तो आत्म स्थित, अनुभवी महापुरुष और पूर्ण तत्त्ववेता महापुरुष हैं'।** हम इनके दर्शन करके बड़े ही प्रसन्न हुए हैं. इधर कनखल में रहने वाले ब्राह्मणों पण्डितों ने भी महाराज श्री की ओजस्वी वाणी सुनी तब उनमें से एक पण्डित केशवानन्द जी ने कहा- हे भगवन्! **मुझे आपके दर्शन करने से अत्यंत आनन्द की प्राप्ति हो रही है, आपकी वाणी में ऐसी कोई शक्तिरखी हुई है जो सभी के हृदयों को बरबस आकर्षित करती है. आप तो संसार का उद्धार करने के लिए इस धरा पर अवतार धारण करके आये हो।** इसी प्रकार पण्डित केशवानन्द व महन्त प्रेमदास जी के साथ मिलकर देवभूमि हरिद्वार में एक सप्ताह तक निवास कर उतराखण्ड के चार धाम की तीर्थयात्रा पर निकल पड़े।

सर्वप्रथम ऋषिकेश पहुँचकर स्वर्गाश्रम, लक्ष्मण झूला, भरत मंदिर, शीशम झाड़ी आदि के दर्शन कर संत-महात्माओं की कुटिया पर पधारे. यह स्थान झाड़ी के नाम से जाना जाता था वहाँ अनेक ऋषि-मुनि, तपस्वी संत निवास करते थे. चार दिनों तक संतों से ज्ञान चर्चाओं का आदान- प्रदान कर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज पूरी भक्त- संत मण्डली के साथ पैदल यात्रा द्वारा वहाँ के नैसर्गिक वातावरण में सुन्दरतम

रमणीय स्थलों के दर्शन करते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे.

पहाड़ियों के बीचों-बीच कलोल करती हुई माँ गंगा की धवल धाराएँ, गगन को छूते हुए ऊँचे-ऊँचे पर्वत-पहाड़, बड़े-बड़े वृक्ष, पेड़, पौधे, नयनाभिराम टेढ़ी मेड़ी पगडण्डियाँ, बड़ी-बड़ी गुफाएँ और उन्हीं गुफाओं में बैठे एक से एक सिद्ध योगी-तपस्वी, ऋषि-मुनि! जो अनेक वर्षों से साधनारत थे. जिनका दर्शन बड़ा ही दुर्लभ होता है. श्री गुरु महाराज का दर्शन कर वे सभी संत-मुनि भी बड़े प्रसन्नचित्त होते दिखाई पड़ रहे थे. प्रकृति के ऐसे अनुपम उपहार स्वरूप दिव्य नजारे देखते हुए सर्वप्रथम पहुँचे **यमुनोत्री तीर्थ धाम!** जो माँ यमुना जी का उद्‌गम स्थल माना जाता है। यहाँ भगवान सूर्यपुत्र यमदेवता एवं पुत्री यमुना जी का मन्दिर व गर्म कुण्ड बना हुआ था। वहाँ का नजारा भी बड़ा अद्‌भुत अलौकिक था! चहुँ ओर ठण्ड ही ठण्ड! बर्फीले पहाड़ और उन पहाड़ों में से ठण्डे-ठण्डे जल स्त्रोत किन्तु प्रकृति का अद्‌भुत खेल, इन्हीं के बीचों-बीच निकलती गर्म जल की धारा और वहाँ बने गर्मजल के कुण्ड! जल भी इतना गर्म कि नहाना भी मुश्किल! और अगर उसमें पुड़ी बेलकर डाल दें तो थोड़ी देर में वह सिककर ऊपर आ जाती है, अगर चावलों को कपड़े में बाँधकर उस कुण्ड में डालें तो वह भी पक जाते हैं और आलू भी कुण्ड में डालने पर उबल जाते हैं। इसी प्रकार सन्त मण्डली ने भी उक्त गर्म जल के कुण्ड से भोजन पकाकर खाया वहाँ चार दिन तक निवास कर स्नान, पूजा-पाठ, ध्यान-स्मरण और वहाँ के आस पास के क्षेत्र में रहने वाले संत-महंत, विरक्त, ब्रह्मज्ञानी आदि संतों एवं तीर्थस्थलों का दर्शन किया साथ ही संतों से पावन तीर्थों की महिमा व पौराणिक स्थलों के बारे में जानकारी प्राप्त की।

वहाँ से हनुमान चट्टी, उतरकाशी होकर पहाड़ों के ऊपर नीचे की चढ़ाई चढ़कर और बीच-बीच में सुन्दर परम रमणीय पौराणिक सिद्ध स्थानों का दर्शन कर पहुँचे पवित्र **तीर्थ गंगोत्री धाम!** जो कि माँ गंगा का उद्‌गम स्थल बताया जाता है यहाँ बड़ा ही सुन्दर भव्य माँ गंगा जी का श्रीमंदिर बना हुआ है। जहां नित्य प्रातः एवं सायंकाल आरती का दिव्य नजारा बड़ा ही अद्‌भुत होता है। साथ ही १८-२० किलोमीटर की ऊँची पहाड़ी के मध्य 'गोमुख' धाम भी बना हुआ है, वह भी बड़ा ही मनमोहक दर्शनीय

स्थल है। वहाँ बड़े-बड़े बर्फीले पहाड़ों का दृश्य बड़ा नयनाभिराम था। संतों की गुफाएँ अपने आप में अलोकिक थीं। विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियों से परिपूरित हिमालय पर्वत की शृँखलाएँ! मंद-मंद समीर और मनमोहक सुगन्ध से भरपूर हिमालय की छटा!

उस गंगोत्री धाम में स्थित माँ गंगा जी के मंदिर में सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज एवं संत मण्डली ने माँ गंगा का दर्शन, पूजा-पाठ व आरती का दिव्यतम दर्शन किया. तत्पश्चात् सभी ने निर्मल गंगा मैया के शीतल जल में स्नान किया. हिमालय का अत्यंत ही रमणीक सुन्दर-सुन्दर पावन स्थलों का दर्शन कर सभी बड़े ही प्रसन्न हुए. वहाँ पर श्री गुरु महाराज जी एक तपस्वी साधु के यहाँ गये जो कि बारहों महीने दिगम्बर (नग्न) अवस्था में साधना-तपस्या में लीन थे. ऐसे अनेक दुर्लभ योगी-सत्पुरुषों के दर्शन-दीदार व ज्ञानवार्ता कर तीन दिन गंगोत्री धाम में रहकर आगे की यात्रा के लिये प्रस्थान किया। मार्ग में बूढ़ा केदार, त्रियुगी नारायण, भृगु गंगा से जाकर गन्धमाल्य पर्वत का दर्शन किया। प्रकृति छटा के अनेक अद्भुत लेकिन सौम्य सुन्दरता लिये हुए अविस्मरणीय नजारे देखते हुए **श्री केदारनाथ तीर्थधाम** पर पहुँचे। जहाँ वर्षा बहुत अधिक पड़ती है। सर्दी भी अत्यधिक थी। मंदिर के चहुँ ओर बर्फ ही बर्फ की पहाड़ियाँ दिखाई पडती हैं। मंदिर का मार्ग एवं मंदिर में भी बर्फ की चादरें सी लिपटी रहती हैं। यह धाम के साथ ही भगवान शिव का एक ज्योतिर्लिंग भी माना जाता है। यहाँ भगवान शिव का प्रातःकाल अभिषेक, पँचामृत स्नान-दर्शन व पूजा-पाठ का विधान है। पण्डित पुरोहित यहाँ पूजा-अभिषेक करवाते हैं। स्वामी जी ने संत मण्डली के साथ भगवान केदारनाथ के दर्शन करके आरती, पूजा-अभिषेक किया। इस धाम पर एक दिन निवास कर आगे **श्री बद्रीनाथ तीर्थ धाम** पहुँचे। यहाँ भगवान बद्रीविशाल का सुन्दर एवं भव्य मंदिर बना हुआ है। यहाँ प्रातः सायंकालीन आरती का नजारा भी अवर्णनीय है। घंट-घड़ियाल-शँख की मधुर ध्वनियाँ पहाडियों को झंकृत करती हैं। उस समय हिमालय की ऊँची उँची पहाडियों में भी अध्यात्म की सुंगध आती है। पँच दिवसीय निवास कर अनेकानेक साधु-संत-तपस्वी, ऋषि-मुनियों का संसर्ग व ज्ञानचर्चा का आदान-प्रदान किया। यहाँ बहने वाली अलकनन्दा में दर्शन- स्नान व

पूजा-पाठ किया. इधर मंदिर के निकट ही गौरी कुण्ड के नाम से एक गर्म कुण्ड बना हुआ था, जिसे तप्त कुण्ड भी कहते हैं यह सदाशिव ने प्रकट किया था। इन अत्यधिक ठण्डे बर्फीले पहाड़ फिर भी बीचों-बीच गर्मजल धारा का प्रवाह! सच में अद्‌भुत है प्रकृति की महिमा! करिश्मामयी अद्‌भुत नजारे जो सबका मन मोह लेते हैं। ऐसे आनन्दवर्धक प्राकृतिक दृश्यों के मध्य भगवान बद्री विशाल के दर्शन स्वामी जी ने पूरी मण्डली के साथ किये। इसी के साथ माँ सरस्वती नदी का उद्‌गम स्थल, व्यास गुफा, भीम पुल, गणेश गुफा, माना गाँव, संत-महात्मा, योगी-तपस्वी, ज्ञानी, ऋषि- मुनि, विरक्त साधुओं का दर्शन-दीदार किया। इसी बद्रीनारायण धाम में पितृऋण मुक्ति के लिए तर्पण पूजा पाठ का विधान भी शास्त्रों में बताया गया है। पंचदिवसीय बद्रीधाम के दर्शन कर सभी संत गद्‌गद हुए तत्पश्चात् मार्ग से नीचे उतरते समय जोशी मठ, गीता काशी, शबरी नगर, फूलों की घाटी आदि दर्शनीय स्थानों का दर्शन करते करते धीरे-धीरे पैदल यात्रा कर **युगपुरुष सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** भक्त-संत मण्डली के साथ डेढ़ माह में सम्पन्न चार धाम की यात्रा कर पुनः ऋषिकेश से होते हुए तीर्थनगरी हरिद्वार पहुँचे। जहाँ पतित पावनी, मोक्षदायनी माँ भगवती भागीरथी में दर्शन-स्नान, पूजा-पाठ आदि किया।

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की अमरनाथ यात्रा

भूखे को अन्न-प्यासे को पानी- जब बाबा बर्फानी

आज की यात्रा और पहले की यात्रा में बड़ा अन्तर है। आज से 70-80 वर्ष पूर्व तीर्थों की यात्रा करना बड़ा कठिन व दुर्लभ माना जाता था। उस समय किसी भी प्रकार की कोई सुविधा, भौतिक संसाधन नहीं थे। बड़ा ही दुष्कर एवं कठिन होता था तीर्थयात्रा करना। किन्तु संत-महापुरुष तो सदा सैलानी होते हैं वे तो जहाँ-जहाँ जाते हैं पग धरते हैं तो उस तीर्थ की महिमा और अत्यधिक बढ़ जाती है। तभी संतों ने अपनी वाणी में कहा है-

पलटू तीर्थ को चला-बीच मिलियो संत।
एक मुक्ति के कारने-मिल गई मुक्ति अनन्त।।

एक तीर्थ का फल तो दूसरा संत दर्शन अर्थात् अनन्त मुक्ति मिल जाती है। ऐसे ही प्रेम प्रकाशियों के हृदयेश्वर भगवत् स्वरूप ब्रह्मनेष्ठी, तपोनिष्ठ सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज भी संत-भक्त मण्डली के साथ निकल पड़े **'श्री अमरनाथ धाम'** की यात्रा पर! भ्रमण करते हुए पहुँचे सर्वप्रथम श्रीनगर-कश्मीर! वहाँ बाबा श्रीचन्द चिन्नार के स्थान पर आये-जहाँ पर पहले से ही अनेक साधु-संत अमरनाथ यात्रा के लिये आये हुए थे। सभी संतों से मिलकर ज्ञान चर्चाएँ की। तत्पश्चात् संत मण्डली के साथ कश्मीर की सैर करने निकले. वहाँ का नजारा बड़ा ही अद्भुत मनमोहक था। वहाँ के सुन्दर उद्यानों में रंग-बिरंगे पुष्प, कैसर क्यारी, सुगंधित पुष्पों की महक, सभी को अपनी ओर आकर्षित कर रही थी। बड़े- बड़े दारु वृक्ष-पेड़-पौधे, पहाड़ों के बीचों-बीच बहते स्वच्छ निर्मल पानी के झरने, छोटे-छोटे पानी के तालाब और उन तालाबों में कमल के खिले हुए पुष्प! मन्द-मन्द शीतल और सुगंधित समीर, फलों से लदे हुए वृक्ष-पेड़ और लतायें। वाह! क्या अद्भुत-अवर्णनीय प्रकृति की अनुपम छटा का नजारा था। ऐसा लग रहा था- मानों स्वर्ग साक्षात् जमीन पर आ गया हो। प्रकृति के अलौकिक दृश्य देख **'श्री गुरुदेव भगवान'** संत मण्डली सहित एक बगीचे में पहुँचे, जहाँ एक सुन्दर व्यास चक्र (घेरा) देखा. वहाँ अपनी लाठी गाड़कर उस चक्र केन्द्र में आ बैठे। इस बीच वहाँ एक मीरासी सुरीला गवैया आकर सारंगी की तान छेड़कर बड़े मधुर स्वर में आलाप गाने लगा. ये देखकर सभी संत-भक्त बड़े ही प्रसन्नचित्त हुए. वहाँ सद्गुरु महाराज जी ने भी मधुर आलाप में एक बड़ा ही सुन्दर भजन गाया.

उस समय उद्यान में जहाँ- जहाँ कथावार्ता-गोष्ठी आदि हो रही थी वहाँ से सभी लोग आकर स्वामी जी का भजन सुनने लगे. भजन- सत्संग सुनने के बाद सभी हैरान होकर एक-दूसरे से पूछने लगे कि ये महात्मा कहाँ के हैं। इनकी वाणी और दर्शन में अपार शक्ति विद्यमान है. हमारे चित्त को बड़ा आनन्द आया। ये तो साक्षात् ईश्वरीय शक्ति प्रतीत हो रही है. तब अन्य संतों ने बताया कि ये 'सिन्ध प्रदेश' के तपस्वी महापुरुष हैं. ऐसे ही कुछ दिन वहाँ जिज्ञासुओं को सत्संगामृत का पान कराया साथ ही वहाँ के नैसर्गिक वातावरण, नाना प्रकार के सुशोभित पुष्पों की बेल- लताएँ एवं वृक्षों के बीच बैठे चकोर, मोर, पपीहे, कोयल, मैना, तोता आदि पक्षियों की मधुर कलरव का आनन्द लिया। वहाँ का रमणीय अलौकिक दृश्य ऐसा था जैसा स्वर्गलोक में स्थित भगवान इन्द्र का नन्दन-कानन!

इसी बीच एक समय सत्संग-प्रवचन करने के पश्चात् **'पण्डित किशोरीलाल'** ने खड़े होकर कहा- **हमारे कश्मीर के भाग्य उदय हुए हैं जो कि ऐसे ब्रह्मनेष्ठी, ब्रह्मज्ञानी महात्मा का पदार्पण हुआ है।** आपका साक्षात् दर्शन करने से ऐसा प्रतीत होता है मानो परिपूर्ण परमात्मा स्वयं अवतार धारण कर हम सब जीवों का उद्धार करने के लिए इस धराधाम पर आये हैं. हमें दर्शनों की बड़ी प्यास थी. आज हमारी प्यास तृप्त हुई है। दूसरे दिन स्वामी जी मण्डली के साथ जगद्गुरु शंकराचार्य जी के मठ पर दर्शनार्थ गये। उस समय शंकराचार्य जी भी वहाँ पर ही उपस्थित थे। वे गुरुदेव भगवान से मिलकर बड़े ही प्रसन्न हुए और आसन पर बैठाकर जलपान आदि कराया। उन्होंने कहा- कल हमारे साधु-संतों ने आपका सत्संग सुना, उन्हें बड़ा आनन्द आया- हमें भी कुछ भजन सुनाओ। तब सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने वैराग्य और ओजस्वी वाणी में भजन गाया-

टेक : अजब अजायब कुदरत हमको-सद्गुरु देव लखाई,
इस कुदरत को जो जन जाने, सो मेरा गुरु भाई.....

अंत में सद्गुरु महाराज जी ने सभी संतों से विदा लेकर संत मण्डली सहित संतों की गुफाएँ-कन्दराएँ व पौराणिक सिद्ध स्थल, सिद्ध पीठ, मंदिर आदि स्थानों के दर्शन करते हुए श्री अमरनाथ के लिए पैदल यात्रा करते हुए आगे के लिए प्रस्थान किया..

सर्वप्रथम एक रात 'पहलगांव' जो पूर्व में बेलगांव के नाम से विख्यात था (बताते हैं यहाँ भगवान शंकर ने नन्दी बैल का त्याग किया था), में विश्राम किया तथा दूसरे दिन पैदल मार्ग से पर्वतों-पहाड़ों के सुन्दर दृश्य, जलधारा के सुन्दर-सुन्दर स्त्रोत देखते हुए धीरे-धीरे भ्रमण करते चलते चले जा रहे थे. सभी संत-साधु सत्नाम साक्षी..... की धुनि और हर हर महादेव..... का उद्घोष करते हुए और सभी बम भोले की भक्ति में रमे दिखाई दे रहे थे।

टेड़ी-मेड़ी पगडण्डियाँ, ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों की बर्फीली चोटियाँ आदि पार कर **'चन्दनवाड़ी'** पहुँचे। कुछ समय वहाँ ठहरकर 'शेषनाग झील' जिसे शेषनाग पर्वत भी कहा जाता है (यहाँ भगवान शिव ने अपने गले से नागों का त्याग किया था), यहाँ मान्यता है कि पानी में अनेक बार नागों की आकृतियाँ बनती हैं। पहाड़ों से निकलने वाली जलधाराएँ भी नाग जैसी आकृति वाली हैं। यहाँ स्नान करने से ब्रह्महत्या एवं गौहत्या जैसे पापों से भी मुक्ति मिलती है। वहाँ श्री गुरु महाराज जी सहित सभी सन्तों ने स्नान-पूजा-पाठ आदि किया। एक रात वहाँ निवास कर अगले दिन **'पंचतरणी'** आये। यहाँ के लिए कहा जाता है कि भगवान शिव व पार्वती ने नृत्य किया था। तब भगवान शिव के मस्तक से माँ गँगा जी प्रकट हुई थीं जो पांच धाराओं में परिवर्तित हो गईं तथा एक धारणा यह भी है कि यहाँ भगवान शिव ने पाँच तत्त्वों का भी परित्याग किया था। ऐसे चलते- चलते, ठण्डी- ठण्डी बर्फ की फुहार, सावन की नन्ही-नन्हीं बूंदे, कड़कड़ाती ठण्ड, ऊबड़-खाबड़ चिकने रास्तों को पार कर **'श्रावण पूर्णमासी'** को पहुँचे **'श्री अमरनाथ धाम'।** वहाँ श्री गुरु महाराज जी ने साक्षात् बर्फानी भोले बाबा के दर्शन करके भगवान त्रिपुरारी का पूजन-अर्चन करके अभिषेक किया. गुरुदेव और भगवान का अनोखा मिलन! अपनत्व आत्मिक भाव से एक-दूसरे का दर्शन कर बड़े ही प्रसन्नचित्त दिखाई पड़ रहे थे! ऐसा लग रहा था मानो बिछुड़े प्रेमी-यार-सखा मिल गयें हों. काफी समय तक टकटकी लगाये एक-दूसरे को निहार रहे थे। उस अलौकिक दृश्य का वर्णन करना शब्दों द्वारा सम्भव नहीं है। कौन समझे ऐसे दुर्लभ योगी महापुरुष की गुण गाथा व लीलाओं को! वहाँ दो-तीन दिन निवास कर संतों की गुफाएँ, चहुँ ओर हरि-हरियाली आच्छादित ऊँची अट्टालिकाएँ! बर्फीली पहाड़ियाँ! लुका-छिपी करते बादल, कलोल करती नदियों की निर्मल धाराएँ, दुर्लभ जीव जन्तु एवं पेड़ पौधे, वनस्पतियाँ आदि अनेक प्रकृति के अद्भुत, मनोरम, अवर्णनीय नजारे देख सभी संत-साधु-भक्त प्रेमी गद्गद हो गये।

वहाँ सभी संतों ने हाथ जोड़कर श्री गुरुदेव भगवान से पूछा- हे प्रभु! इतनी ऊँचाई पर यह तीर्थ स्थान कैसे बना और इसका नाम अमरनाथ क्यों पड़ा?

तब श्री गुरुदेव भगवान ने कहा- देवर्षि नारद के कहने व समझाने पर एक समय पार्वती माता ने भगवान शंकर से पूछा- हे भगवन्! एक बात तो बताओ कि आपने गले में मुण्डो (खोपड़ी) की माला क्यों पहन रखी है?

यह सुनकर भगवान शिव ने कहा- पार्वती ये मत पूछो! क्योंकि तुम अगर यह सच सुनोगी तो तुम्हें दुःख होगा. पार्वती माँ जिद करने लगी. हे प्रभु! मुझे बताओ.....

इस पर भगवान शिव ने कहा- ये जितने भी मुण्ड मैंने धारण किये हैं ये सभी तुम्हारे हैं. तुम्हारा जन्म अनेक बार हुआ और अनेक बार हुई मृत्यु! तुम्हारी मृत्यु के बाद सिर के मुण्ड

बनाकर मैंने गले में धारण कर रखे हैं. तब पार्वती ने कहा- भगवन्! मेरी मृत्यु होती है तो आपकी क्यों नहीं? इस पर भगवान ने कहा- हमने '**अमर कथा**' सुन रखी है. जो अमर कथा सुन लेता है वह सदैव अजर और अमर हो जाता है. इस जन्म-मरण के चक्कर से छूट जाता है। तब पार्वती माता ने भगवान शिव से प्रार्थना की कि हे प्रभु! मुझे भी '**अमर कथा**' सुनाओ। तब भगवान शंकर ने माता पार्वती को इसी कन्दरा की गुफा में बैठाकर एकांत में पूर्णिमा के दिन '**अमर कथा**' का पान कराया. उस समय चारों ओर शान्त वातावरण था. तब श्री गुरु महाराज जी ने '**राग भैरवी**' में एक बड़ा सुन्दर '**अमरकथा**' की महिमा का भजन गाया-

टेक : शंकर बोले पार्वती सुन, अमर कथा सुखदानी।
जांके श्रवण से कट जावे, कठिन काल की कानी।।

1. **चन्द्र कला के विमल छटा से, शोभत था बन सारा**
शान्ति धुनी से गूंज रहा था, अद्भुत रैन निज़ारा।।
हिमाचल की कन्दरा बैठे, गौरी शंकर प्यारा।
अमर कथा अब मोहि सुनाओ, कहने लगी भवानी।।

2. **धन्य धन्य मति गिरिजा तेरी, अमर कथा रुचि धारी।**
देवों को भी दुर्लभ मिलती, अमर कथा यह प्यारी।
अमर कथा यह अमर बनावे, काटे ममता जारी।
अमर कथा के कहने वाला, जग में को गुरु ज्ञानी।।

3. **अमर आत्मा देह अनात्म, आत्म रूप तुम्हारा।**
आत्म दृष्टा देह दृश्य है, आत्म सब से न्यारा।
जाग्रत, स्वपन, सुषोप्ति का इक, आत्म है आधारा।
इन्द्रिय अगोचर आत्म है जिहँ, मन बुद्धि लखे न बानी।।

4. **ब्रह्म आत्मा स्थित है नित, अपने महिमा माहीं।**
बन्ध मोक्ष ते असंग आत्मा, आत जात कहँ नाहीं।
पांच भूत प्रकृती सारी, स्पर्श करत न ताहीं।
अगम अरूप अनूप अनादी, वेदनि गति नहिं जानी।।

5. गाथा सुनते पार्वती को, आ गई निद्रा वाहीं।
सावधान हो, 'हूँ-हूँ' करके, तोते सुन लई ताहीं।
मर्म न जाना महादेव था, मस्त मौज के माहीं।
शंकर पूछा गिरिजा बोली, मैं निद्रा उरझानी।।

6. कहे टेऊँ शुक गाथा सुन ली, भेद शम्भू ने पाया।
तोते के तब मारन कारन, डण्डा ले उठ धाया।
उड़ के तोता वेद व्यास के, त्रिया वदन समाया।
व्यास वचन सुन तोते को तज, चले शंभू सैलानी।।

सांई टेऊँराम बाबा जी ने इसका पूर्ण अर्थ समझाकर '**अमर कथा**' संत-भक्तों को श्रवण कराई. और बताया कि इस स्थान पर कथा सुनाने के कारण ही इस पवित्र स्थान का नाम '**अमरनाथ**' पड़ा। जो भी जब अमरकथा श्रद्धा भाव से श्रवण करता है वह जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त होकर शिवलोक को प्राप्त होता है। यहाँ आज भी भगवान भोले बाबा के स्वयंनिर्मित बर्फानी रूप में शिवलिंग के दर्शन होते हैं। लाखों श्रद्धालु भक्त यहाँ अमरनाथ की यात्रा कर बर्फानी बाबा के दर्शन कर गद्‌गद होते हैं। इसी प्रकार सद्‌गुरु श्री सांई टेऊँराम बाबा जी ने १२ दिवसीय संत मण्डली सहित पैदल चलकर '**श्री अमरनाथ यात्रा**' पूरी की थी।

सांई टेऊँराम बाबा का अमृत कुम्भ दर्शन

कुम्भ राशिगते जीवे यद्दिने मेषयो रविः।
हरिद्वारे कृतं स्नानं पुनरावृति वर्जनम्।।

आज से लगभग ८७ वर्ष पूर्व, सन् १९२६ में सर्वप्रथम, एक समय फाल्गुन मास में स्वामी ग्वालानन्दजी और कुछ साधु-संतों ने **'सद्गुरु श्री सांई टेऊँराम बाबा जी'** से विनम्र निवदेन किया- हे प्रभु! दीनानाथ! इस वर्ष बारह वर्षीय पूर्ण अमृत महाकुम्भ हरिद्वार उतराखण्ड में चल रहा है। जिसकी महिमा सभी धर्मग्रंथ, शास्त्र व संत-महात्मा बताते हैं। हमारी भी हार्दिक इच्छा है कि आपके पावन सानिध्य व छत्रछाया में हरिद्वार में चल कर अमृत महाकुम्भ का दीदार-दर्शन करें। इस मेले में अनेकानेक संत-महात्मा, वैरागी, सन्यासी, उदारी, वीतरागी, हठयोगी, महन्त-मण्डलेश्वर व षडदर्शन साधु समाज आदि धर्मावलम्बी एकत्रित होते हैं। जिनका सत्संग-दर्शन, अध्यात्म ज्ञानचर्चा व माँ गंगा मैया का दर्शन-स्नान कर जीवन को सार्थक बनायें।

इस पर सांई टेऊँराम बाबा ने कहा- श्री अमरापुर दरबार डिब्र पर प्रत्येक वर्ष लगने वाला चैत्र मेला भी है, उसे भी छोड़ना नहीं है। इस मेलेमें हजारों श्रद्धालु दूर-दूरसे आते हैं. आखिरकार सभी संत-महात्माओं से विचार विमर्श कर स्वामी सर्वानन्दजी, स्वामी शान्तिप्रकाश जी व कुछ संत-सेवाधारियों को दरबार पर चैत्र मेले का आयोजन करने हेतु छोड़कर हरिद्वार कुम्भ मेले में आ गये।

उस समय सांई टेऊँराम बाबा के साथ स्वामी ग्वालानन्द, स्वामी गुरुमुखदास, स्वामी बसन्तराम, स्वामी उधवदास, संत मुरलीधर और कुछ प्रेमी भक्त मण्डली बनाकर हरिद्वार कुम्भ मेले में पहुँचे. सर्वप्रथम माँ गंगा मैया का दर्शन-स्नान, पूजा-पाठ आदि नित्यकर्म किया। तत्पश्चात् अनेकानेक संत-महन्त-महापुरुषों के पास जाकर ज्ञानचर्चा, आध्यात्मिक ज्ञानवार्ता, सत्संग-प्रवचन का श्रवण व प्रतिदिन माँ गंगा जी में स्नान आदि का लाभ प्राप्त किया।

सभी संत-सेवाधारी सांई के साथ संत- महात्माओं से मेल मिलाप, सत्संग व दर्शन कर अलौकिक आनन्द को प्राप्त कर रहे थे।

इन्हीं दिव्य दर्शनों के साथ-साथ अनेक तपस्वी साधुओं को धूणी रमाते, तप साधना में लीन देखा, कोई साधू १२ वर्षों से खड़े रहकर साधना में लीन था तो कोई तपस्वी काँटों की शैय्या

पर तो कोई साधु चरण पादुका में कीलें लगाकर चल रहा था। कोई-कोई संत महापुरुष जीवन भर जमीन पर सोने का व्रत धारण किये देखे तो कई हठयोगी तपस्वियों ने अपनी भुजा को सजा दे रखी थी; उनका हाथ सदैव ऊपर ही रहता है। कहते हैं कि अमृत महाकुम्भ मेले में ऐसे-ऐसे विलक्षण दिव्य संत महापुरुषों के दर्शन होते हैं जो कभी भी गुफाओं-कन्दराओं से बाहर तक नहीं निकलते। केवल कुम्भ में प्रत्यक्ष रूप में दर्शन देते हैं। वे जीवन भर उन्हीं गुफाओं में भजन साधना में लीन रहते हैं। कुछ तो फल-फूल खाकर तो कुछ वायुभक्ष निर्जली संत होते हैं, जो अन्न-जल तक ग्रहण नहीं करते। ऐसे अनेक तप साधनारत संत-महात्माओं का दीदार-दर्शन कुम्भ मेले के अन्तर्गत ही हो पाता है।

ऐसे विलक्षण अद्भुत अविस्मरणीय सिद्ध तपस्वी महापुरुषों के दिव्य दर्शन सद्गुरु श्री सांई टेऊँराम बाबा जी ने संत मण्डली के साथ प्रथम बार हरिद्वार महाकुम्भ मेले में लगभग दो महीने तक रहकर किये।

इसी प्रकार सद्गुरु श्री सांई टेऊँराम जी महाराज ने जो-जो दृश्य हरिद्वार महाकुम्भ मेले में देखा, उनका वर्णन विस्तारपूर्वक कर सत्संग में बड़े ही भक्तिभाव के साथ सुनाया-

दिव्य रूप दर्शन गुरां के निज़ारे।
देखा मेला कुम्भ का गंगा के किनारे।।

1. योगी वैरागी, त्यागी बेरागी। रागी अनुरागी, हरिहर पुकारे।।
2. सन्यासी, उदासी प्रेम प्रकाशी। अकाशी, बनवासी, नंगे थे हजारे।
3. ब्रह्मचारी पुजारी, आर्य अचारी। संसारी उदारी करत बहु भण्डारे।
4. भेष पन्थ बहुते, जड़ चेतन पूजते। सन्त महन्त वक्ते, अखण्ड ज्ञान उच्चारे।।
5. कहे टेऊँ काहीं, ऐसा मेला नाहीं। देखे जो जन ताहीं, तिसे भाग भारे।।

भगवद् कृपा से माँ गंगा मैया के पावन तट पर कुम्भ मेला देखा, ऐसा अलौकिक दृश्य था. जहाँ पर योगीराज, महात्मा, वैरागी और त्यागी (जो कभी पैसे को हाथ से छूते तक नहीं), पुजारी, सन्यासी, उदासी और उतराखण्ड में रहने वाले महायोगी, तपस्वी, जो कभी भी शहर में नहीं आते, नागा साधु-संत उन सभी के दर्शन कुम्भ में हो रहे थे. बड़े-बड़े आह्वान, दशनाम, जूना

आदि अनेक अखाड़ों में संत-महन्त-मण्डलेश्वरों का दर्शन! अनेक संत-महात्माओं द्वारा खोले गये अन्नक्षेत्र, बड़े- बड़े विशाल भण्डारों का आयोजन, जिसमें भण्डारे का प्रसाद (सबके लिए था परिचित अपरिचित) खाकर साधु-संत- महात्मा व श्रद्धालुजन भगवद् भजन स्मरण कर रहे थे। सभी पंथ-सम्प्रदायों के संत-महात्मा व मण्डलेश्वर और कथावाचकों ने सत्संग शिविर लगा रखे थे। जहाँ भजन व भोजन निरन्तर चल रहा था. कहीं चतुर्वेदी यज्ञों का महाअनुष्ठान, तो कहीं पूजा-पाठ आदि के शुभ कार्य चल रहे थे. ऐसा अनूठा, अनोखा, अद्भुत दिव्य महाकुम्भ मेला हिन्दू सनातन धर्म में लगाया जाता है। वैसे तो अनेक मेले लगते हैं किन्तु संत-महात्माओं का दर्शन-सत्संग, माँ गंगा स्नान- दर्शन, पूजा-पाठ, यज्ञ-हवन, धर्म का प्रचार आदि सात्विक कर्मों से परिपूर्ण इस कुम्भ मेले की विशिष्ट पहचान थी।

अमृत प्राप्त करने का सुअवसर जिसके पान करने से मन स्वतः निर्मल पवित्र हो जाता है. जिनके पूर्व जन्म के भाग्य जाग्रत होते हैं, उसे ही ऐसे सात्विक आध्यात्मिक कुम्भ मेले के दिव्य दर्शन होते हैं।

सद्गुरु श्री सांई टेऊँराम बाबा जी ने इसी प्रकार **'हरिद्वार अमृत महाकुम्भ'** का सभी संत-सेवाधारियों को अपने 'श्रीमुख' से अमृतपान द्वारा दीदार-दर्शन कराया।

श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ में भगवद्-भक्ति

भक्त भक्ति भगवंत गुरु, चतुर नाम बपु एक।
इनके पद वन्दन किए, नासत विघ्न अनेक।।

भगवद्-भक्त, भगवद्-भक्ति, भगवान और गुरु, कहने को तो ये चार हैं किन्तु वास्तव में इनका स्वरूप एक ही है। जैसे गाय के थन देखने में चार हैं लेकिन चारों के अंदर एक ही समान दूध भरा रहता है, वैसे ही भक्त-भक्ति-भगवन्-गुरु ये चारों अलग-अलग दिखाई पड़ते हैं पर सर्वदा सर्वस्य अभिन्न हैं। चारों में से एक से भी प्रेम हो जाने पर तीनों स्वतः ही प्राप्त हो जाते हैं। यही अलौकिक भक्ति का स्वरूप है। मुक्ति तो फिर भी मिल जाती है पर भक्ति मिलना बहुत कठिन होगा। भक्ति में ही प्रेम छिपा रहता है। वह दिखलाई नहीं देता, पर होता है। ये भक्त ही जान सकता है। भक्ति क्या होती है ये वही भक्त बतला सकता है जो प्रभु के प्रेम-रस में डूबा हो. भक्त भक्ति में रम जाते हैं। ऐसे ही भक्तमाल में भक्तजन मणि हैं, भक्ति है सूत्र, जिस प्रकार मालाओं में चार वस्तुएँ प्रमुख होती हैं- मणियाँ, सूत, सुमेरु और कुँदना (गुच्छ), उसी प्रकार भक्ति रूप सूत्र में मणियाँ पिरोयी जाती हैं। माला के ऊपर जो सुमेरु होता है वे हैं- श्री गुरुदेव और सुमेरु ना जो गाँठ रूपी गुच्छा (फूदबा) है वे हैं-भगवान! जैसे माला में मणि की विशेषता पर माला का नामकरण होता है- यथा : रुद्राक्ष माला, तुलसी माला आदि वैसे ही भक्त संतों की माला होती है- **'भक्तिमाला'**. उन्हीं भक्ति रूपी मणि मालाओं में मोती हुए हैं- **प्रेम प्रकाश पंथ के प्रवर्त्तक संस्थापक आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज**. जिनकी भक्ति की सुगंध भी अलौकिक थी। उसी भक्ति रूपी ज्ञान सरोवर **'श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ'** में आज असंख्य श्रद्धालु-भक्त डुबकी लगा रहे हैं। **'श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ'** भक्ति-प्रेम-ज्ञान से ओत-प्रोत है, जो समूचे संसार में जीवों को भक्तिमार्ग की ओर अग्रसर कर रहा है। महापुरुष तो भक्ति करते हुए किसी पदार्थ की कामना नहीं करते, उन्हें केवल हरि भक्ति ही श्रेष्ठकर लगती है जैसा कि सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने स्वयं अपनी वाणी में लिखा है-

अहं भक्त पराधीनो, ह्यस्वतंत्र इव द्विज।
साधुभिर्ग्रस्त हृदयो भक्तैर्भक्तजन प्रियः।। टेक ।।

परमात्मा से किसी भी पदार्थ-सांसारिक सुख सम्पत्ति, ऋद्धि-सिद्धि, माल-मिलक्यित, राज वैभव सुख, माणिक मोती, स्वर्ग, आदि की कामना न करते हुए केवल अपनी कृपादृष्टि बनाकर हमें निहाल कर दें. माँगना ही है तो केवल भक्ति का दान. जिससे परम पद की प्राप्ति हो सके. गोपियों ने उद्धव से कहा था- हमें तो मुक्ति-भुक्ति कुछ नहीं चाहिए. हमें तो केवल कृष्ण ही प्रिय है, यही ब्रह्म है, यही मुक्ति है. इससे अधिक कोई भक्ति नहीं है. वह हमारा है हम उनके हैं. जैसा कि कहा गया है- **'हम तुम्हारे हैं प्रभू जी- तुम हमारे हो, तुम हमारे ही रहोगे- ऐ मेरे प्रीतम'** और फिर **'तुम हमारे थे प्रभू जी- तुम हमारे हो, तुम हमारे ही रहोगे- ऐ मेरे प्रीतम'** ऐसी ब्रह्ममय दृष्टि जब बन जाती है तो स्वयं भक्ति महारानी का रूप धारण कर लेती है. श्री भगवान ने भी कहा- मैं सर्वथा भक्तों के अधीन हूँ. मुझमें तनिक भी स्वतंत्रता नहीं है. मेरे सीधे सादे सरल भक्तों ने मेरे हृदय को अपने वश में कर रखा है. भक्त व संतजन मुझसे प्यार करते हैं और मैं उनसे. हमारा आत्मिय मिलन है।

भक्ति ज्ञान दान देहि दीन के दयाल जी।
दीन के दयाल मोहि जान अबुद्ध बाल जी।।

साधु-संत और भक्त तो मेरे हृदय हैं और उन प्रेमी भक्तों का हृदय स्वयं मैं ही हूँ. वे मेरे अतिरिक्त और कुछ नहीं जानते तथा मैं उनके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं जानता. ऐसी होती है अनन्य भक्ति. जिसमें भक्त और भगवान एक हो जायें।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जो साक्षात् भक्ति के स्वरूप थे आज उनकी अमृतवाणी द्वारा असंख्य भक्त भक्ति महारानी को प्राप्त कर अपने जीवन को सफल कर रहे हैं. जो जो भी श्री गुरुदेव भगवान एवं ईश्वर की शरण लेगा वह अवश्य ही इस भवसागर से पार हो जावेगा।

ऐसे थे भक्ति के परम उपासक, महायोगी, ब्रह्मवेत्ता, सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज को हमारा शत्-शत् नमन!

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

प्रत्येक शनिवार की शाम – स्वामी टेऊँराम के नाम हर मनोकामना पूरी करता है– स्वामी टेऊँराम का दरबार

आस्था-विश्वास पर टिका है यह पूरा संसार! **'विश्वासम् फलदायकम्'** विश्वास से ही फल की प्राप्ति होती है। बिना विश्वास के किसी भी क्षेत्र में हम आगे नहीं बढ़ सकते। बच्चों को अध्यापक पर, यात्रियों को वाहन के ड्राइवर पर, शिष्य को गुरुदेव पर और भक्त को भगवान के ऊपर विश्वास होता है तभी सफलता मिलती है। ऐसी ही श्रद्धा दृढ़ विश्वास हमें भी रखना होगा। भीलनी का दृढ़ विश्वास अपने गुरुदेव पर था तभी भगवान श्रीराम सर्वप्रथम उनके घर आये। एकलव्य को अपने गुरुदेव द्रोणाचार्य पर विश्वास था तभी मूर्ति से धनुर्विद्या की प्राप्ति कर ली. ऐसे ही सारा संसार आस्था-श्रद्धा विश्वास पर आधारित है। हर व्यक्ति अपनी-अपनी मनोकामनायें पूरी करने हेतु किसी न किसी देवस्थल मंदिर, पूजा स्थल या फिर संत महात्माओं के तपःस्थली पर जाकर मन्नत माँगता है। कोई पैदल यात्रा कर, कोई दीप जलाकर तो कोई संसाधनों द्वारा प्रतिदिन जाकर दर्शन प्रार्थना करता है। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि मेरी हर मनोकामना पूर्ण हो जाये तो यह सत्य भी है कि- भगवान या गुरुदेव के समक्ष की गई टेर (प्रार्थना) अवश्य ही स्वीकार होती है बस आवश्यकता से अधिक न हो व उसमें शुचिता का भाव हो। वे तो जगत के पालनहार-भक्त वत्सल होते हैं, वे हमें संतान की तरह पालते हैं और हमारा ध्यान रखते हैं। किसी भी प्रकार का दुःख हो, कष्ट-क्लेश-विपत्ति सब दूर कर देते हैं। बस, हम लोगों की आस्था व विश्वास में दृढ़ता पक्की होनी चाहिए।

हम सभी प्रेमप्रकाशियों के लिये हमारे **आराध्य भगवान सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज** हैं। उन्हीं का पावन तीर्थ श्री अमरापुर दरबार (डिब्) और पावन साप्ताहिक जन्म दिवस शनिवार! ये हम सब प्रेम प्रकाशियों के लिये बड़ा महत्त्व रखता है। इस तीर्थ स्थल व पवित्र दिवस शनिवार की तो बड़ी महिमा है. अपूर्व वरदान प्राप्त है इन दोनों को। जो भी भक्त श्रद्धा भाव के साथ आयेगा सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज उसकी हर मनोकामना अवश्य ही पूरी कर देते हैं।

दर तो मैंने बहुत देखे- पर मगर,

तेरे दर की महिमा अपरम्पार है...

तभी तो पावन तीर्थ श्री अमरापुर धाम, जयपुर, जहाँ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के आविर्भाव दिवस शनिवार को प्रातःकाल से रात्रिपर्यन्त दर्शनार्थी भक्तों का तांता लगा रहता है। भक्तजन प्रातःकाल शीघ्र उठकर अपनी-अपनी आस्था दृढ़ विश्वास के साथ घर से निकल पड़ते हैं सद्गुरु स्वामी टेऊँराम के दरबार!

ऐसा ही दिव्य अद्भुत नजारा सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की दरबार पर प्रत्येक शनिवार को देखा जाता है। शनिवार की भोर वेला से साँझ ढले तक बाबा की अमरापुर दरबार पर एक आध्यात्मिक मेला सा लगा रहता है। कोई दीप जला रहा है, कोई चौखट चूम रहा है, कोई पवित्र रज को मस्तक पर लगा रहा है, कोई दर्शन कर रहा है तो कोई समाधि स्थल पर बैठकर ध्यान-प्रार्थना कर रहा है। चहुँ और भीड़ ही भीड़, भक्तों का तांता लेकिन अपने आप में व्यवस्थित अनुशासित! प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी आस्था का अर्ध्य चढ़ाकर आशीर्वाद प्राप्त कर रहा है।

इसी भक्ति भाव से ओत-प्रोत पक्के नियम के साथ कोई चालीस शनिवार, कोई चालीस दिन (चालीसा), तो कोई प्रतिदिन बाबा के दर्शन कर नतमस्तक होकर, सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को मना रहा है और तो और कई बच्चे, बूढ़े, माताऐं और भाई लोग दूर दूर से पैदल यात्रा का हर शनिवार को सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की नयनाभिराम दिव्य झाँकी के दर्शन करते हैं. जयपुर शहर के 50-100 किलोमीटर की दूरी के क्षेत्र अजमेर, सवाई माधोपुर, सीकर, चौमू, निवाई, बस्सी, कानोता, टोंक, किशनगढ़ आदि स्थानों से भक्तजन प्रत्येक शनिवार को बाबा की पवित्र समाधि स्थल पर दण्डवत होकर हाजरी लगाते हैं, दर्शन कर प्रसन्नता के साथ मन का आनन्द पाते हैं।

लाखों की बिगड़ी बनाई इस द्वार ने, मुझको भी इस दर का इक आधार है।

अनेक भक्त श्रद्धालु तो हर शनिवार को पैदल यात्रा करके बाबा जी के दर्शन करते ही हैं पर सद्गुरु टेऊँराम प्रकटोत्सव, कार्तिकोत्सव या जयंती पर्व-उत्सवों पर तो हजारों श्रद्धालु **'श्री**

अमरापुर धाम' आकर सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज की मोहिनी छवि के दर्शन कर गद्गद हो जाते हैं. इस पवित्र द्वार पर जो भी जैसी भावना से बाबा के समक्ष प्रार्थना-याचना करता है तो बाबा उनकी हर मनोकामना अवश्य ही पूर्ण कर देते हैं। ऐसे पवित्र तीर्थ धाम गुरु तपःस्थल श्री अमरापुर धाम को शत् शत् नमन, कोटि-कोटि वन्दन!

प्रेम प्रकाशियों के लिए, श्री अमरापुर स्थान ।
सात द्वीप नौ खण्ड में, तीर्थ यही महान ।।

श्री अमरापुर स्थान की, महिमा अपरम्पार ।
जो जन आ दर्शन कर, उतरे भव से पार ।।

श्री अमरापुर स्थान के, सद्गुरु टेऊँराम ।
भक्त जनों को देत है, शांति सुख आराम ।।

! !ॐ श्री सत्नाम साक्षी ! !

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने खण्डू गांव में होली महोत्सव

आज गुरु घर होरी रे रसिया, होरी रे रसिया.....

सिन्ध प्रदेश की पवित्र धरा धाम! अनेकानेक संत- महापुरुष-फकीरों की जन्म स्थली! सिन्धु नदी का पावन तट, वहाँ का एक छोटा सा सुन्दर खण्डू गाँव, जहाँ अवतरित हुए- श्री प्रेम प्रकाश पंथ के पुरोधा मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज! पवित्र व दर्शनीय स्थल!

जिस स्थान पर संत-महापुरुषों का अवतार होता है वह पवित्र स्थल सदैव पूजनीय एवं वन्दनीय हो जाता है, वह भविष्य में 'श्रद्धास्थल' के रूप में विख्यात होता है. कहते हैं जब संत-महात्मा, फकीर अवतार लेते हैं तो वह स्थान-गाँव-देश-मास-दिवस-तिथि- पक्ष और वह घड़ी, पल, समय सभी पवित्र और पूजनीय बन जाते हैं. जिस प्रकार युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का अवतार सिन्ध प्रदेश- खण्डू गाँव- शनिवार-आषाढ़ मास-शुक्ल पक्ष (सिंधी चौथ तिथि) आदि सब पवित्र व वन्दनीय हो गये।

सिन्ध देश के प्रेरणा पुंज **सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज** पंच दिवसीय होली महोत्सव अपनी पावन जन्मस्थली खण्डू गाँव में ही भक्ति-भाव के साथ मनाते थे। इस उत्सव में सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का अखण्ड भजन व भोजन भण्डारा चलता था। गाँव के सभी नर-नारी सत्संग गंगा में डुबकी लगाकर अपने जीवन को सार्थक बनाते थे।

आज गुरु घर होरी रे रसिया, होरी रे रसिया.....

पाँच दिनों तक चलने वाली सत्संग गंगा का अमृतपान करने पूरा खण्डू गाँव व आस-पास के कस्बो- गाँवों से प्रेमीजन बढ़ चढ़कर भाग लेते थे। अलौकिक आनन्द! भक्ति के रंग में रंगे सभी भक्तजन! प्रगाढ़ प्रेम की सरिता! संत-महात्माओं का अनोखा संगम! प्रेम, भक्ति, वैराग्य, धर्म-कर्म, ज्ञान-विज्ञान आदि विषयों पर आध्यात्मिक ज्ञान चर्चाएँ! चहुँ ओर आनन्द की बयार! श्रद्धा का केसर! ज्ञान का गुलाल! शुभ गुण रूपी इत्र-अम्बीर! अद्भुत हर्षोल्लास! भक्ति, प्रेम, ज्ञान का अनोखा आलम!

संतों के संग होरी खेलो, पीवो प्रेम प्याला रे
जाँके पीवत होय बहारी, दिन-दिन बढ़ती जाय खुमारी, होवे मन मतिवाला रे।
श्रद्धा की तुम केसर करिये, इत्र अम्बीर श्रेष्ठ गुण धारिये, लाओ ज्ञान गुलाला रे।
कहे टेऊँ यह होरी गाये, ब्रह्मानन्द में वृत्ति मिलाये, पाओ आनन्द विशाला रे।।

'महाराजश्री' का कथन होता था- **संतों के साथ प्रेम रूपी होली खेलें**. प्रेम से ही भगवान की प्राप्ति होती है। प्रेम का प्याला बड़ा ही अद्भुत होता है। प्रेम का जानना अर्थात् भगवान को पहचानना! प्रेम खुमारी जिसे एक बार चढ़ जाती है फिर वह आसानी से नहीं उतरती..... प्रेम रंग बड़ा ही निराला है। हृदय में जब प्रेम होगा तब भगवानका साकार रूप में दर्शन होगा. **ऐसे ही भक्ति, प्रेम, ज्ञान रूपी रंग में रंग जाना ही संतों के संग होली खेलना है।**

साईं टेऊँराम बाबा इस पवित्र होली महोत्सव के पावन अवसर पर एक महत्त्वपूर्ण सद्गुण रूपी संदेश देते थे- होली उत्सव के अन्तर्गत पाँचों दिन पूरे गाँव के लोगों में से कोई भी माँस-मछली, अण्डा एवं मदिरापान का उपयोग नहीं करे। ऐसा संकल्प पूरे गाँव वालों से करवाते थे और साथ ही प्रतिज्ञा करवाते थे कि आज के बाद हम कभी भी माँस मदिरा व निषिद्ध पदार्थों का सेवन नहीं करेंगे। महाराजश्री कि तपस्या-भक्ति का ऐसा प्रभाव होता था कि सत्संग में आये सभी लोग संकल्प लेकर निषिद्ध पदार्थ खाना छोड़ देते थे।

मांस खान से मनुष्य की, होवे बुद्धि मलीन।
कह टेऊँ बुद्धि भ्रष्ट से, कर्म-धर्म हो खीन।।
मांस मछली खात जो, सुरा पान से हेत।
ते नर नरके जात है, मात पिता समेत।।

मनुष्य को जीवन भर कभी भी माँस-मछली, शराब का सेवन नहीं करना चाहिये; क्योंकि ये पापकर्म है। इससे मति (बुद्धि) मलीन होती है। सारे पुण्यकर्म क्षण भर में नष्ट हो जाते हैं और माता-पिता समेत नरक में जाना पड़ता हैफ अतः हमें ऐसे पापकर्म से बचना चाहिए।

अंत में पूरी सभा को माँस-मछली, अण्डा, मदिरा का उपयोग अपने जीवन में न करने की प्रतिज्ञा करवाते थे। महाराज श्री की ओजस्वी वाणी का ऐसा प्रभाव होता था कि सत्संग में आने वाले सभी लोग दृढ़ संकल्प लेकर इन पदार्थों का सेवन न करने का संकल्प लेते थे। हमें भी गुरु महाराज जी की यह शिक्षा आत्मसात् करनी चाहिए. इन निषिद्ध पदार्थों का सेवन करने वाले इस लेख को पढ़कर संकल्प करें कि आज के बाद हम इन पदार्थों का सेवन नहीं करेंगे।

इस प्रकार प्रेम व ज्ञान के सरोवर रूपी होली महोत्सव खण्डू गाँव में श्रद्धाभाव के साथ मनाया जाता था. हम सब भी गुरुदेव भगवान के ज्ञान का शुभ संकल्प लेकर होली महापर्व के सत्त्वगुण के रंग में रंग जायें। भक्ति में भावित और प्रेम के सरोवर में ज्ञान की डुबकी लगाएँ।

होली के रंग–साईं टेऊँराम बाबा के संग

टेऊँराम बाबा चोला मेरा रंग दे, चोला मेरा रंग दे– ओ खण्डू वाले,
ओ खण्डू वाले– चोला मेरा रंग दे.....

1. **जिस रंग में तेरा अमरापुर रंगा है, अमरापुर रंगा है–बड़ा सोहणा सजा है**
   ऐसी रंगी रंग दे– चोला मेरा रंग दे.....
2. **जिस रंग में तेरे–सर्वानन्द रंगे हैं, सर्वानन्द रंगे हैं– तेरे साथ ही सजे हैं**
   ऐसी रंगी रंग दे– चोला मेरा रंग दे.....
3. **जिस रंग में तेरे संत रंगे हैं, संत रंगे हैं– तेरी भक्तिमें भरे हैं**
   ऐसी रंगी रंग दे– चोला मेरा रंग दे.....

टेऊँराम बाबा चोला मेरा रंग दे, चोला मेरा रंग दे– ओ खण्डू वाले,
ओ टण्डे वाले– ओ जयपुर वाले.....

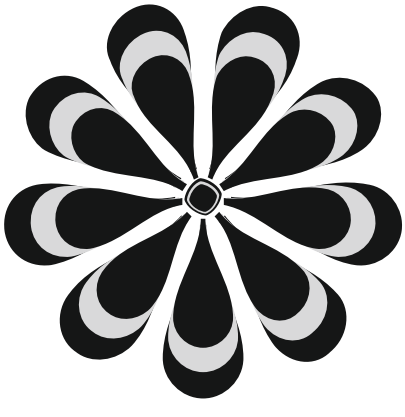

संक्षिप्त जीवन परिचय

मंगलमूर्ति आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

नाम	:	मंगलमूर्ति आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!
जन्म	:	६ जुलाई सन् १८८७, सम्वत् १९४४!
जन्म दिन	:	पावन शनिवार दिवस!
जन्म का माह-महीना	:	आषाढ़ मास!
जन्म समय	:	प्रातःकाल ५ बजे!
जन्म तिथि	:	षष्ठी तिथि (सिन्धी चौथ तारीख)!
जन्म के समय पक्ष	:	शुक्ल पक्ष!
कुल	:	फूलवंशी- क्षत्रिय कुल!
जन्म स्थान	:	पवित्र सिन्धु नदी का पावन तट!
जन्म के समय जिला	:	हैदराबाद!
जन्म के समय प्रदेश	:	सिन्ध देश!
जन्म के समय ग्राम	:	खण्डू!
पिताश्री	:	भक्तप्रवर श्री चेलाराम जी!
माताश्री	:	धर्ममयी माता कृष्णादेवी जी!
भ्राता	:	श्री टहलराम, श्री वेंसीमल, श्री ग्वाललाल!
बहनें	:	श्रीमती ज्ञानी बाई, श्रीमती ईश्वरी बाई!
नामकरण संस्कार	:	'टेऊँ' (ब्रह्म से परिपूर्ण)!
नामकरण करने वाले पण्डित	:	श्री जयरामदास ब्राह्मण!
पण्डितों द्वारा भविष्यवाणी	:	यह बालक होनहार होगा और अवतार कहलायेगा!
अध्ययन	:	प्रभु चिन्तन में मग्न (ॐ से साक्षात्कार)!
भगवद् दर्शन	:	बाल अवस्था में सिन्धु नदी में जल के अन्दर वरुण देवता के दर्शन!
जिज्ञासा	:	आत्म चिन्तन कर भगवद् प्राप्ति करना!
दीक्षा गुरु	:	गुरुदेव दादा सांई आसूराम जी महाराज!

बाल्यावस्था की गूढ़ पहेली	:	अखर पखी रछ - रान्द जा के नर ना डि॒ठा तो!
व्यापार (सेवा कार्य)	:	सच्चा सौदा नाम का!
खेती-बाड़ी	:	विरह की आग में तोतो - मिठा नित बो॒ल थो बो॒ले!
तपस्या	:	गहन जंगल, श्मशान, सिन्धु नदी का तट, एकांत स्थान, रेत का टीला!
धर्म प्रचार	:	हिन्दू सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार ५५ वर्ष तक!
पंथ-मण्डल स्थापना	:	प्रेम प्रकाश पंथ!
सगुण प्रभाव मंत्र	:	ॐ श्री सत्नाम साक्षी!
आध्यात्मिक पवित्र ग्रंथ	:	श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ (७६२ पृष्ठीय)!
अनुभवी वाणी	:	श्री अमरापुर वाणी (हिन्दी भजन ६२१), सिन्धी भजन (७७०)!
सलोक माला	:	१०८ पद सलोक माला!
आध्यात्मिक रचनाएँ	:	अमर कथा, ब्रह्मदर्शनी, प्रेम प्रकाश दोहावली, कवितावली-छन्दावली!
वेदों का सार तत्त्व	:	सोलह शिक्षाएँ!
सुख-शान्ति का पाठ	:	६० शान्ति के दोहे!
प्रातःकालीन सामूहिक प्रार्थना	:	गुरु मांगू खजाना भजन दा.
वस्त्राभूषण	:	खादी का चोला, लंगोट, टोपी!
कर कमलों में शोभित	:	चिप्पी, लाठी, इकतारा!
भजन आसन मुद्रा	:	सिद्धासन, पद्मासन!
चरण पादुका	:	खड़ाऊँ!
प्रभु से याचना	:	सद्गुरु मुझको दान दे, प्रेम भक्ति विश्वास। कहे टेऊँ नित सुमति दे, सन्तनि मांहि निवास।।
ऐतिहासिक सिद्ध स्थल	:	श्री अमरापुर दरबा॒र (डिबा॒) टण्डाआदम सिन्ध!
भगवद् स्वरूप का साक्षात् दर्शन	:	भगवान वरुणदेव, लक्ष्मी नारायण एवं ब्राह्मणी के वेश में माँ लक्ष्मी के दर्शन!
प्रसिद्धि	:	डिबा॒ वाले सांई टेऊँराम बाबा!

पल्लव-अरदास	:	आशवन्दी गुरु तो दर आई, तुम बिन ठौर...!
इष्टदेव	:	भगवान श्री लक्ष्मी नारायण!
प्रसाद	:	ढ़ोढा चटनी महाप्रसाद (प्रेम से युक्त, स्नेह से सिक्त, भाव से भावित) !
निरन्तर प्रवाहित	:	सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज का अखण्ड भजन व भोजन भण्डारा प्रसाद!
प्रेम प्रकाश मण्डल के आधार स्तम्भ	:	देने वाले सांईं टेऊँराम बाबा, लेने वाले सांईं टेऊँराम बाबा!
प्रमुख उद्देश्य	:	प्रेम का प्रकाश फैलाना, सनातन धर्म का प्रचार करना, भूले-भटके जीवों को सत्यमार्ग का ज्ञान कराना!
सत् सन्देश	:	सर्व से तुम गुण उठाओ, दोष दृष्टि हरे। देख अवगुण आपना जो, बहुत है मन में भरे।।
शिष्य संतगण	:	आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के यहाँ ८५-८६ शिष्यों का संत मण्डल था जिसमें स्वामी ग्वालानन्द, स्वामी सर्वानन्द, स्वामी गुरुमुखदास, स्वामी शान्तिप्रकाश, स्वामी बसन्तराम, स्वामी चन्दनराम, स्वामी माधवदास, स्वामी मुरलीधर, स्वामी प्रेमानन्द, स्वामी गंगाराम, स्वामी जीवनमुक्त, स्वामी गणेशानन्द, स्वामी स्वयं प्रकाश आदि संतवृन्द थे!
अंशावतार	:	भगवान शिवस्वरूप सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!
लीला संवरण	:	सम्वत् १९९९, पुरुषोत्तम मास, सिन्धी तारीख चौथी, दिन शनिवार- सन् १९४२!
अमरपद	:	अमरलोक से आगमन, अमरलोक प्रस्थान!
धराधाम पर देशाटन	:	मात्र ५५ वर्ष तक!
डिब् की ख्याति	:	तप तपस्या की तपोस्थली रेत के टीले पर बनी अमरापुर दरबार!
पवित्र समाधि स्थल	:	श्री अमरापुर दरबार (डिब्), जयपुर में!
वर्तमान तीर्थ स्थल	:	पावन श्री अमरापुर स्थान स्थान, जयपुर!

लीला दर्शन : खिल्लू को डूबने से बचाना, मरे हुए श्वान का उद्धार करना, चोर की कर्म रेखा मिटाकर चौकीदार बनाना, कण्डी वृक्ष के कांटे दूर करना, तीव्र गर्मी में वर्षा करना, डूबती नौका को पार लगाना, इन्द्र देवता द्वारा भेजी गयी 'माया' को पहचानना, सूखे कुएँ में जल प्रवाहित करना, सौ व्यक्तियों के भोजन से हजारों भक्तों को भरपेट भोजन खिलाना, सांईड्रिना को नशे पते की आदत से मुक्ति दिलाना, दुकान पर सच्चा सौदा नाम का लिखवाना, पत्थर के नीचे से जलधारा प्रवाहित करना, मिट्टी व पानी से भोजन बन जाना आदि सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जीवन से जुड़े अनेक लीला- प्रसंग जीवन चरितामृत में उल्लेखित हैं।

।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

भगवत-भक्ति के अमृतरस से भरे हैं संत-भक्त और उनकी अमृतवाणी

हरि भक्त सो जानिये, जो हरि जपाय।
कहे टेऊँ हरि जाप से, हरि देत मिलाय।।

हरि भक्त स्वयं तो प्रभु से स्नेह-प्रेम करता ही है साथ ही अपने संग से अनन्त जीवों का उद्धार कर देता है अर्थात् हरि से प्रेम कर अपने आप को परमात्मा से मिला देता है जैसा कि प्रेम भगवान का साक्षात् स्वरूप ही है। जिसे विशुद्ध सच्चे प्रेम की प्राप्ति हो गई, उसे भगवान मिल जाते हैं. वास्तव में देखा जाए तो प्रभु रस रूप है। श्रुतियों में भी परम पुरुष की रसरूपता का वर्णन मिलता है- **"रसो वै सः"** प्रेम का निजी रूप रस स्वरूप परमात्मा ही है। इसलिए जैसे परमात्मा सर्व व्यापक है वैसे ही प्रेम तत्त्व- आनन्द रस भी सर्वत्र व्याप्त है। वस्तुतः परमेश्वर में प्रेम होना ही विश्व में प्रेम होना है और विश्व के समस्त प्राणियों में प्रेम ही भगवान में प्रेम है, क्योंकि स्वयं परमात्मा ही सदैव आत्म स्वरूप में विराजमान है। जो व्यक्ति इस भगवद् प्रेम के रहस्य को भली भाँति समझ लेता है, उसका सभी प्राणियों के साथ अपनी आत्मा के समान प्रेम हो जाता है। ऐसे प्रेमी की प्रंशसा भगवान श्री कृष्ण ने गीता के छठवें अध्याय में की है-

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो म तः।।

जो योगी अपने ही समान सम्पूर्ण भूतों में सम देखता है और सुख अथवा दुःख में भी सम रहता है, वह योगी ही श्रेष्ठ माना गया है।

प्रेम ही आनन्द है और आनन्द ही प्रेम है। भगवान सगुण- साकार की उपासना करने वालों के लिये प्रेममय बन जाते हैं और निर्गुण-निराकार की उपासना करने वालों के लिये आनन्दमय बन जाते हैं। वे सच्चिदानन्दघन परमात्मा ही संत- महापुरुष और भक्तों के प्रेमानन्द हैं !

कह टेऊँ हरि भक्ति है, सर्व सुखों की खान।
तांते हरि की भक्ति कर, पाओ सूख महान।।

प्रभु- परमात्मा की भक्ति सर्व सुखों की खान है। सांसारिक सुख क्षणभंगुर है अर्थात् सदैव परमात्मा की भक्ति करके अपने जीवन को सार्थक बनावें। सन्त-महापुरुषों की परम्परागत कड़ी के दिव्य अलौकिक भगवद् भक्ति के प्रेमा स्वरूप प्रेम प्रकाश पंथ के प्रवर्तक- संस्थापक-आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की भगवद् प्रेमाभक्ति भी अद्भुत- विलक्षण थी! बाल्यावस्था से भगवद् भजन में वृत्ति परमानन्द से जुड़ गई ! घर-परिवार का आध्यात्मिक वातावरण, माता कृष्णादेवी भी गोदी में बैठाकर राम नाम व ब्रह्मज्ञान की लोरी सुनाती। बालपन में ही सुसंस्कार का बीज उनके हृदय में रोपित हो गया। 'ॐ' अक्षर से अनुभव ज्ञान की प्रखरता प्रारम्भ हो गई. निर्झर व एकांत स्थान में बैठकर प्रभु परमात्मा का चिन्तन मनन व साधना कर उस परमानन्द को रिझाया।

वह भक्ति ईश्वर के प्रति प्रेम स्वरूप और अमृत स्वरूप भक्ति है। जिसको परम प्रेम रूपी भक्ति प्राप्त हो जाती है, वह स्तब्ध-शान्त हो जाता है और आत्माराम बन जाता है। किन्तु भक्ति सहजता से नहीं प्राप्त होती। उसके लिये समर्पण करना पड़ता है। जो सर्वस्व भगवान को समर्पित हो जाता है, उसे ही भक्ति महारानी मिलती है। जैसा कि आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने अपनी अमृतवाणी में बताया है-

भक्ति से रीझे भगवान, भक्ति ही भगवत को भावे।
ना हरि रीझे कर्म करने से, ना हरि पाठ पढ़नि से,
ना हरि रीझे देते दान, भावें बहु विधि यज्ञ रचावें।।

अर्थात् परमात्मा को रिझाने के लिए किसी साधन की आवश्यकता नहीं. केवल स्वच्छन्द प्रभु-प्रेम! वही प्रेम आगे भक्ति के रूप में परिवर्तित हो जाता है। उसी भक्ति द्वारा परमात्मा की मंजिल प्राप्त हो जाती है और वह परम पद को प्राप्त करता है। **'यज्ज्ञात्वा मतो भवति स्तब्धो भवति आत्मारामो भवति'**

तपस्वी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की भगवद् भक्ति प्रेमा स्वरूप है, तभी पंथ का

नाम **'प्रेम प्रकाश पंथ'** रखा! कहते हैं कि भगवद् प्रेमी भक्त संत स्वयं तो तरते ही हैं, लोकों को भी तार देते हैं। **"स तरति स तरति सलोकोस्तारयति"** इतना ही नहीं भगवान के प्रेमी संत-महापुरुष या भक्त तीर्थों को सुतीर्थ, कर्मों को सुकर्म और शास्त्रों को सत्शास्त्र कर देते हैं। जैसे सद्गुरु टेऊँरामजी महाराज द्वारा रचित आध्यात्मिक भक्ति ज्ञान, ईश्वर की प्रेमाभक्ति व गुरुभक्ति से ओत-प्रोत श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ! जो कि अनुभवी ज्ञान का अमूल्य खजाना, जिसमें भगवद् भक्ति के सरल व सुगम भजन, पद्य, छन्द, कवित्त, दोहे, सलोक माला सभी लोक कल्याणकारी, वैराग्यता, अभयदान, राम-नाम गुणगान, कर्म उपासना, सगुण भक्ति, प्रभु की व्यापकता, जगत की नीरसता, गुरु महिमा आदि परमात्मा को प्राप्त करने के तथ्य हैं। इन सभी का सरल ज्ञान इस पवित्र ग्रंथ के मनन-पठन-पाठन से प्राप्त होता है, इससे अनुभव किया जा सकता है कि उस दुर्लभ योगी की कितनी कठिन साधना एवं पूर्ण भगवद् प्रेमा-भक्ति होगी। जिससे गूढ़ से गूढ़ तत्त्वज्ञान को बड़ी सहजता-सरलता और अनुभवता से रच दिया।

योगी पुरुषों की प्रेमाभक्ति बड़ी विलक्षण एवं रहस्यमयी होती है। अनेक शास्त्रों में उन सत्पुरुषों के विलक्षण गुणों पर प्रकाश डाला गया है- भगवद् प्रेम की प्राप्ति के लिए रोना, आँसू बहाना, एकांत में बैठकर भजन करना, भक्त का सर्वोपरि आनन्द है, जब भक्त की ऐसी भावना विरह वेदना होगी, तब भगवद् प्रेम का मार्ग प्रशस्त होता है तब उसे खान-पान-आराम तो क्या संसार के किसी भी भौतिक पदार्थों से मोह-ममत्व-आसक्ति नहीं रह जाती, केवल भगवद् प्रेमाभक्ति में उसे महाआनन्द की प्राप्ति होती है।

लगन लगी जब राम से, क्या लोकनि से काम।
टेऊँ मोहि न भावहीं, खान पान आराम।।

ऐसे ही परम रहस्यमयी संत, भक्त और महापुरुषों की अपनी-अपनी विलक्षण भगवद् प्रेमाभक्ति और तत्त्वमय प्रेम साधना !

संत तुलसीदास जी महाराज आस्था के मूर्तरूप थे। सर्वव्यापी श्रीहरि का प्रकटीकरण प्रेम से होता है तभी लिख दिया- **'हरि व्यापक सर्वत्र समाना- प्रेम ते प्रगट होहिं में जाना'**। चैतन्य महाप्रभु का दिव्य प्रेम संकीर्तन के रूप में व्यापक था। जिनके हृदय से ऐसी सहज धारा बह

निकली- जिसने सम्पूर्ण जगत को प्रेम प्लवित कर दिया अक्रूर भगवान के वन्दन-प्रधान भक्त थे. प्रिय सखा के रूप में भगवान की प्रेमाभक्ति से उन्हें परम धाम प्राप्त हुआ।

भक्त श्री सुतीक्ष्ण जी जैसे सर्वगुण सम्पन्न भक्त के मन में अपने इष्ट भगवान श्रीराम जी के प्रति अनन्य श्रद्धा एवं भक्ति थी। उन्हें परमाराध्य नील कलेवर श्रीराम ही प्राणप्रिय थे। वैसे भी भगवान ने कहा है- **'मन्मन्त्रोपासका लोके मामेव शरणं गता'** संसार में जो लोग मेरे मन्त्र की उपासना करते हैं और मेरी ही शरण में रहते हैं, मैं उन्हें नित्य प्रति दर्शन देता हूँ। नामदेव जी की भगवद् भक्ति भी अद्भुत थी. उन्होंने लिखा- 'कहत नामदेव साँची मान- निरभै होई भजि लै भगवान' नाम की भक्ति के प्रति कहा कि निर्भय होकर भगवान का भजन करना ही आनन्दमय है. भक्त जयदेव जी **'गीत गोविन्द'** की कविता लिख रहे थे परन्तु वह पूरी ही नहीं हो पा रही थी, तब भगवान ने **'देहि में पद पल्लवमुदारम्'** लिखकर कविता पूरी कर दी। ऐसे ही एक संत ने कहा है कि एक परमेश्वर के सिवाय कोई मेरा नहीं है, वे ही मेरे सर्वस्व हैं अर्थात् श्रद्धा से युक्त अनन्य प्रेम करना और भगवान से भिन्न किसी भी वस्तु में किंचितमात्र भी आसक्ति न रखना यह अनन्य भक्ति है। संत, भक्त, महापुरुषों के समान ही सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज की भगवद् के प्रति प्रेमाभक्ति भी उनके साधनाकाल एवं उनकी अमृतवाणी, सद्ग्रंथों में छलकती है। यत्र-तत्र देशारटन करते समय ओजस्वी वाणी से सत् उपदेश देकर जीवों में प्रेमाभक्ति की अलख जगाई !

कहे टेऊँ हरि नाम जप, भूलो ना क्षण एक।
भोगत-भोगत विषय, बीते जन्म अनेक।।

अनेक जन्म-जन्मांतर के पश्चात् मिला मानुष चोला, उसे व्यर्थ में न गंवाकर श्वांस-श्वांस से परमात्मा का चिन्तन करना चाहिए। विषय भोगों की लालसा समाप्त नहीं होती। न जाने कितने जन्म विषय भोग पदार्थों में व्यतीत कर दिये। एक-एक श्वांसका मूल्य पहचान कर जीव को नाम स्मरण करना चाहिए और प्रभु परमात्मा को कभी भी भूलना नहीं चाहिए। क्षण-क्षण परमात्मा का चिन्तन करना भगवद् भक्ति है।

हरी नाम आनन्द निधि, कह टेऊँ जप ताहिं।
जांके जप से सदा, आनन्द मन के माहिं।।

हरि नाम सुमरण करने से अलौकिक आनन्द की प्राप्ति होती है जो भी हरि भक्ति करता है उन्हें अथाह (समुद्र) की भाँति सुख प्राप्त होता है अर्थात् इस लोक में ही नहीं अपितु परलोक में भी हरि की भक्ति सुख प्रदान करती है !

श्रवण, स्मरण, कीर्तन, पद सेवन भगवान।
अर्चन वन्दन दास्य रति, सत्य समर्पण जान।।

नवधा भक्ति में एक भी भक्ति को प्राप्त करने वाला अवश्व ही मोक्ष-मुक्ति को पाता है। जैसे बलि ने समर्पण भक्ति कर मुक्ति प्राप्त कर ली। इस प्रकार गुरुदेव सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने अनेक साधु-संत-महात्माओं की संगत में भगवान के विभिन्न रूपों का श्रवण, मनन, दर्शन कर प्रभु परमात्मा का साक्षात्कार किया. सखाओं भक्तों को संग लेकर भगवान का कीर्तन किया। भगवान के श्रीचरण (पद) की सेवा दास्य प्रेम, सखा के भाव रखकर उनकी अर्चना-वन्दना में अपना सब कुछ अर्पित कर दिया. ऐसे भगवद् भक्त सदैव अजर-अमर हो जाते हैं। ऐसी श्री गुरुदेव भगवान ने अपने जीवन में नवधा भक्ति को आत्मसात् कर भगवत् धाम को प्राप्त किया।

संत महानुभावों का कथन है कि भगवान में और प्रेम में कोई भी तात्त्विक अन्तर नहीं। ईश्वर प्रेममय है ! ईश्वर ही प्रेम है तथा प्रेम ही ईश्वर है। यह जीवात्मा उसी ईश्वर का अंश है **"प्रेम हरी कौ रूप है, त्यौं हरि प्रेम स्वरूप"** इसी प्रकार सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की भक्ति भी प्रेमास्वरूप है। अर्थात् प्रेमाभक्ति बिना परमात्मा को प्राप्त नहीं किया जा सकता। प्रेम ही प्रधान है। परमात्मा प्रेमाधीन है। प्रेम ही भक्ति स्वरूप है। प्रेम स्वरूप अपनी पराकाष्ठा है। परमात्मा को प्रेम और केवल प्रेम ही प्रिय है। ऐसे प्रेमस्वरूप हरि और उनके प्रेमी भक्तों, संतों के पादारविन्दो में कोटिशः नमन् वन्दन !!!

।।ॐ श्री सत्नाम साक्षी।।

ऐसे बना लघु काशी जयपुर में तीर्थ श्री अमरापुर स्थान

अब तो अमरापुर बनी - अद्भुत आलीशान।
जाँको दर्शन करत ही - आनन्द होय महान।।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य परम पूज्य युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज एक समय यात्रा करते हुए हरिद्वार, काशी, दिल्ली, मथुरा वृन्दावन होकर लघु काशी गुलाबी शहर जयपुर पहुँच गये। उस वक्त युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का कोई भी परिचित भक्त जयपुर में नहीं हुआ करता था। चाँदपोल दरवाजे के पास श्री हनुमान मंदिर के समीप एक महात्मा की कुटिया थी। संतश्री ने बड़े ही श्रद्धा प्रेमभाव से स्वामी जी को अपनी कुटिया में रहने के लिए स्थान दिया। स्वामी जी सन्त मण्डली के साथ तीन -चार दिन जयपुर शहर रहकर प्रमुख स्थानों के दर्शन किएं एक दिन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, स्वामी सर्वानन्द जी एवं संत मण्डली के साथ भ्रमण करते हुए स्टेशन की ओर निकल रहे थे- उसी मार्ग में उन्होंने एक सुरम्य जंगल देखा- आसपास का वातावरण बड़ा ही मनमोहक एवं वृक्ष पेड़ पौधों से बड़ा ही रमणीक लग रहा था- उसी के बीचों बीच सुन्दर पानी का तालाब भी बना हुआ था। वह स्थान बड़ा सुंदर लग रहा था।

सद्गुरु महाराज जी ने संतों से कहा कि यह शहर सचमुच मनमोहक है- यहाँ के लोगों में भक्ति भाव व धर्म-कर्म में बड़ी आस्था दिखाई देती है और यह शहर तो सचमुच में बड़ा ही सुंदर रमणीक है। कहते हैं कि संत महापुरुषों के श्रीचरण जिस स्थान पर पड़ते हैं वह तीर्थ बन जाता है तथा महापुरुष तपस्वियों के हृदय में जो भाव आते हैं वह स्वतः भगवद् प्रेरणा होती है कि इस भूमि पर '**अध्यात्म स्थल**' होना चाहिए। संतों की तपस्या का प्रभाव- संकल्प शक्ति श्रीचरण का उस स्थान पर प्रभाव पड़ा और भगवद् प्रेरणा से समय पाकर वह फलीभूत हुआ और इस स्थान पर पवित्रतम तीर्थधाम श्री अमरापुर स्थान बना।

इस प्रकार सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का मन जयपुर में रमा अवश्य था। किन्तु वे अपने जीवन-काल में फिर जयपुर नहीं आ सके। हाँ, उनके उत्तराधिकारी श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के द्वितीय पीठाधीश्वर सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी ने इस बात को याद रखा और श्री गुरुदेव के संकल्प को साकार करते १९४७ में देश विभाजन के कुछ समय बाद लघु काशी कहे जाने वाले गुलाबी नगर जयपुर में ही डेरा जमाया....

भगवद् कृपा व आचार्य जी के आशीर्वाद से उसी तालाब वाले स्थान पर श्री अमरापुर स्थान (पवित्रतम तीर्थ स्थल) बना। गुरुभक्त स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने सभी संत मण्डली के साथ मिलकर बड़े लगन, परिश्रम से बनवाकर सद्गुरु महाराज जी के संकल्प को साकार किया। आज वही पवित्र तीर्थ श्री अमरापुर स्थान, जयपुर श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का मुख्यालय है जो आज विश्व के सुविख्यात तीर्थ स्थलों में माना जाता है। यहाँ पर भगवान श्री लक्ष्मी-नारायण मंदिर एवं पूज्य महाराजश्री का श्रीमंदिर व **'समाधि स्थल'** भी बना हुआ है। यह आस्था, अध्यात्म और श्रद्धा का केन्द्र है, जहाँ प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु नत मस्तक होते हैं।

।।ॐ श्री सत्नाम साक्षी।।

सद्गुरु टेऊँराम महिमा

चहुँदिशि छाई प्रकृति की, अद्भुत छटा ललाम।
हुए अवतरित भूमि पर सद्गुरु टेऊँराम।।

ब्रह्मरूप ब्रह्ममयी सर्गुण रूप साकार।
टेऊँराम बन धरती पर लिया प्रभु अवतार।।

मंगलमूर्ति का मंगलोत्सव, मंगलमय गुरु नाम।
मंगलमय गुरु जन्म दिन, धन गुरु टेऊँराम।।

ब्रह्मलोक के ब्रह्म ने, जब सुनी पुकार।
टेऊँराम का रूप धर आये खण्डू में करतार।।

साईं टेऊँराम जन्म दिवस, उत्सव है अभिराम।
विश्व भर में मना रहे, मिलकर भक्ततमाम।।

सर्व मंगल का मूल है, टेऊँराम शुभ नाम।
जांकी कृपा दृष्टि से, होवे पूरण काम।।

आओ मिलकर दीप जलाएँ, साईं टेऊँराम जन्म मनाएँ।
तिमिर अज्ञान दूर भगाएँ, हृदय में ज्ञान की ज्योति जगाएँ।।

सर्व मंगल का मूल है, टेऊँराम शुभ नाम।
जांकी कृपा दृष्टि से, होवे पूरण काम।।

तू ही मेरा राम है तू ही मेरा श्याम।
तेरी पूजा मैं करूँ, सत्गुरु टेऊँराम।।

सत्गुरु टेऊँराम का, कह न सकूँ उपकार।
सोवत मोहि जगाय के कीना भव से पार।।

सत्गुरु टेऊँराम की, महिमा कही न जाय।
निशदिन माता शारदा, गावत पार न पाय।।

भगवत कृपा धार के, दर्शन दीना आज।
बाल रूप बन मात के, पूरन कीने काज।।

निर्गुण पूरण पारब्रह्म, जो सत्चित सुखधाम।
कृष्णा के घर प्रकटिया, बालक टेऊँराम।।

साधु संत सब पूज्य हैं, सबको है प्रणाम।
श्वासों में पर रम रहे, सद्गुरु टेऊँराम।।

आप अमर चरित्र अमर, अमर आपका नाम।
तव शरणागत भी अमर, धन गुरु टेऊँराम।।

टेऊँ सबके आदि, टेऊँ सबके बाद।
टेऊँ भूलो न कभी, टेऊँ करिये याद।।

तपोनिष्ठ सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जीवन की झलकियाँ

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की वाणी अभेद होती थी। जिससे सभी जाति, धर्म, वर्ण के लोग बड़े मनोयोग से स्वामी जी का सत्संग श्रवण करते थे।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के अखण्ड भोजन भण्डारे का प्रसाद चारों ही वर्ण के लोग बड़े ही भाव से खाते थे। 'मोक हले पई मर्द जी मानी, चारई वर्ण जिमिया थे जानी, मानो कर्ण कुबेर हो दानी, निर्मोही निष्काम।'

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज श्री अमरापुर दरबार, टण्डाआदम सिंध में प्रतिदिन प्रातःकाल योग वशिष्ठ की कथा एवं सायंकाल पारस भाग की कथा किया करते थे।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज प्रतिदिन ब्रह्मवेला में उठकर ध्यान- चिन्तन में समाधिस्थ हो जाते थे।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत-महात्माओं का बड़ा सम्मान करते थे। जो भी संत महात्मा आता था तो स्वयं उनका आदर सम्मान करते, बड़े ही स्नेह भाव से मिलते और ज्ञान चर्चा करते थे, साथ ही उन्हें दरवाजे तक छोड़ने जाते थे।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज सदैव एकांत में बैठकर ध्यान-चिंतन साधना के साथ सत् शास्त्रों का अध्ययन करते थे।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को स्वर संगीत और राग-रागनियों का निपूण ज्ञान था। एक ही भजन को सोलह सुरों में गाने की दक्षता थी. प्रेम प्रकाश ग्रंथ में जो भी भजन है वे सभी राग-रागनियों में रचे गये हैं।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज श्री अमरापुर दरबार डिब पर जितने साधु संत महात्मा रहते थे उनकी देखभाल सार-संभाल स्वयं किया करते थे।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज आश्रम के कार्यों का निरीक्षण कर शेष समय अध्यात्म चिंतन में स्थित रहते थे।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज दिन में केवल एक ही समय भोजन प्रसाद ग्रहण करते थे।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज 'होली उत्सव' प्रायः खण्डू गाँव (जन्म स्थान) में ही मनाते थे।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज प्रायः 'कार्तिक महोत्सव' स्वामी परमानन्द जी महाराज के प्रेमभाव युक्त स्नेहाग्रह पर परमानन्द भण्डार में ही मनाते थे।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जी का सत्संग-प्रवचन सभी जाति, वर्णाश्रम और सभी धर्म सम्प्रदाय के लोग श्रवण करते थे।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की ध्यान मुद्रा सिद्धासन-पद्मासन थी।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज एकान्त जंगल के अलावा कण्डी वृक्ष के नीचे भी तप साधना किया करते थे।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने सिन्ध टण्डाआदम दरबार पर उस समय इतना कुछ न होते हुए भी भोजन प्रसाद अनवरत चालू किया।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जीवन में अनेक कठिन परिस्थितियाँ आयीं किन्तु कभी भी किसी के समक्ष हाथ नहीं फैलाया। यहाँ तक कि इकतारा खरीदने हेतु स्वयं मेहनत मजदूरी की अर्थात् स्वावलम्बी जीवन व्यतीत किया।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भोजन प्रसाद भण्डारे में पंक्तिबद्ध संतों के साथ ही करते थे।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के भजन-सत्संग में प्रेम, दर्द, औज और वैराग्य भरा होता है।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज डण्डा-चिप्पी और इकतारा सदैव अपने साथ रखते थे।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज श्री अमरापुर दरबार में स्थित कुँऐं के बीचों बीच एक गुफा में बैठकर भी अनेक बार तपस्या किया करते थे।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज माँस-मछली-शराब आदि निषिद्ध पदार्थों एवं जिन्न, भूत-प्रेत, गण्डा-ताबीज आदि का बहुत खण्डन करते थे।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के सत्संग में सरलता, सच्चाई, सहज ग्राह्यता थी। उनकी वाणी प्रत्येक के हृदय में अमिट छाप छोड़ती थी।

- जिस प्रकार गुरु गोरखनाथ सिद्धों के साथ बगीचों में या जंगलों में रहते थे उसी प्रकार सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भी संत मण्डली सहित अनेकों बार जंगल या बगीचों में रात्रि विश्राम करते थे।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने स्वयं प्रचण्ड सिद्ध शक्ति से पंथ-मंत्र-ग्रंथ और धाम की स्थापना कर नई अलख जगाई। चार नये आयाम स्थापित किये ।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने अपने जीवन काल में चार धाम, तीर्थ नगरी हरिद्वार, कुम्भ मेला दर्शन, अमरनाथ यात्रा आदि की ।

- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने एक बार गुलाबी नगर जयपुर की भी यात्रा की। दर्शन के बाद ही उनके मन संकल्प आया कि यहां भी एक स्थान होना चाहिए। आज वर्तमान में वही प्रेम प्रकाश मण्डल का मुख्यालय **'श्री अमरापुर स्थान'** हैं।

संकलन / संपादक

प्रेम प्रकाशी संत श्री मोनूराम जी

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर (राज.)

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद (गुज.)